











SRI RAMA RISHNA ASHRAM  
LIBRARY SRINAGAR  
Accession No. ...  
Date ...

کرسن لیلیا 3639





مجموعہ حقوق بحق مصنف محفوظ

- ۱۔ ٹائٹل کیرشن لپلا
- ۲۔ صفہ ۱۹۲
- ۳۔ عکس جنوری ۱۹۸۲ء
- ۴۔ کاتب مصنف
- ۵۔ آرٹ تہ حاشیہ ( // )

۶۔ مول (شیٹھ روپیہ) -/60 Rs.

۸۔ چھاپ خانہ :-

## کھٹا-لیلا

پرنٹر اینڈ پبلشر :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گلشن نگر - چھاپہ پورہ - سرنگر

کشمیر ۱۹۰۱۵

مجموعہ شریعہ کی کتابوں کی دنیا کی قدیم روحانی کتابوں میں بے نظیر اہمیت رکھتی ہے۔ اس کا

सुरगिह श्रुति स्यादन्ति बतरा  
 की स्मृति में स्मृति  
 (मूक्त)

स्वर्गीया  
 श्रीमती मायावन्ती बतरा  
 की  
 पुण्य स्मृति में  
 समर्पित

फाजिल कश्मीरो





بنووم پان موملی سوزہ پورمس  
 میٹر لوی اوسس تہ انگ انگ ساز کورمس  
 ووزس یس نش چھیلتھ تھنڈس کد فرت  
 تلتھ زنگارہ نوڑک سیہ پورمس

شرید گیتاجی کس قسم کے فوق البشر انسان (Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے۔

۵۔ جو ساکھ سے ساکھی ہو نہ دکھ سے دکھی۔ نہ خوف اس کو آئے نہ غصہ کبھی۔ نہ جدوں کے





## حرفِ اول

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب  
 کرشن لیبلا میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور  
 شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے الیشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شامل  
 رہی جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی تزیین  
 (Decoration) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیبلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ  
 ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ پروفیسرِ جین لال جی سپرو اور پٹ  
 سائل کاشمیری صاحبہ نے تعاون دیا اور گنیش مندر پر بندھاک  
 سمتی سرنیگر اور سناٹن دھرم پرتاپ بھاسرنیگر نے مالی امداد  
 دی۔ میں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے  
 کافی قایده اٹھایا میں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے ان کی چند خامیوں



## \* दो शब्द \*

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब “कृष्ण लीला” मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-शान तामीर करने में मुझे ईश्वर-अल्लाह की हमांगीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Decor-oration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है।

जैर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण-भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू, साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल “साइल-कश्मीरी” और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें “कल्याण” गोरखपुर का नायाब खसूसी “भागतङ्क”, और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा



کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی  
 طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا، اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اولیٰ  
 سال اسلامیہ سکولوں میں گزرائے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی  
 کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی  
 کا نقشہ اُتار ہے۔ اس لئے میری کرشن لپلاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر  
 کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہو گا کہ رکھتی سہا سے  
 فراق گورکھپوری کے کلام میں جا بجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو  
 ہندی بھاشا کی کرشن جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا اسمیٰ دار ہے۔  
 دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت  
 میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ  
 نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لپلاؤں پر کھ کر یہ سناں کر  
 یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لپلا کار فاضل کی شاعری اور خیالات بیانات کا

करने में कोई भिन्नक मझसूस नहीं होती — मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबिबत के दस अवायली साल इस्बामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अरबी के माहिरीन असातिजा उत्माए वक्त से जबान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूर अलूम के जवाहर को भजकियां उभरती हैं । यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीव के पहलू-व-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है । दूसरी बात इस हकीकत को निशानदिहो है कि “नात” कहना मेरी सिरिस्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ-व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी “कृष्ण-लीला” पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बयानात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-



کنو اس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیل کے ایک حلقہ سے نکل کر دوسرے  
 حلقہ میں پڑنے میں کچھ تامل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسولؐ  
 ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گور بھگت بھی ہے۔  
 کیونکہ فاضل نے ستگور و سری بابا گورو نانک دیو جی پر بھی اپنی  
 کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مسلمان ہونے کے  
 ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟۔۔۔۔۔  
 کچھ بھی نہیں۔۔۔ ہاں! اتنا کہوں گا کہ لوگ مجھے شاعر کہتے ہیں۔

یہاں چند عامیوں کے سوال کا جواب دینے میں  
 مجھے تامل نہیں کہ میں نے اپنی عمر کے گرانقدر اور  
 مصروف ترین مہم و سال کرشن لیلہ تصنیف اور  
 مرتب کرنے میں اس لئے صرف کئے کہ سری گیتا جی کے  
 مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدس سلوک کا



ययुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमूल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण - भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुरु सिरी बाबा गुरु नानक देव जो पर भी अपनी कई तखलकात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा ? ..... कुछ भी नहीं..... हाँ । इतना कहूँगा कि लोग मुझे “शायिर” कहते हैं —

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमूल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-ब-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ किये कि श्री गोता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

میں قایل ہوں ۔  
ترجمہ :-



your right is  
to work only , but  
never to the fruit  
thereof . Let not  
the fruit of action  
be your object ,  
nor let your  
attachment be  
to inaction .

مجھے کام کرنا ہے اور مرد کار  
نہیں اُس کے پھل پر مجھے اختیار  
کئے بغیر عمل اور نہ دھونڈنا اس کا پھل  
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آتا ہے کہ وسیع النظری سے

نوائے گئے قارئین اور سامعین میری کرشن لیلے کا فی حد تک متاثر ہونگے جس سے  
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات ابھرائیں گے ۔

فاضل کشمیری

گلشن نگر سرینگر 15

1-1-1984



कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार  
नहीं उसके फल पर तुझे इस्तिहार ।  
किये जा अमल और न ढूँढ-इसका फल  
अमल कर, अमल कर, न हो वे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी में नवाजे गए  
कायरीन् और सामियोन मेरी “ कृष्ण-लीला ” से  
काफी हद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों  
में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगे ॥

फाजिल कश्मीरी

गुलशन नगर  
श्रीनगर-१९००१५  
१-१-१९८४

## कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लीला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद, नरोत्तमदास, रत्नाकर, सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढ़ावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिखमत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाज़िल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को भङ्ग कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिव्यक्ति



किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय-भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है । वही 'जय-जय हरि' कहने लगता है । उसका हृदय پاک-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता । फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन अल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मेल को धो डालता है —

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,  
छलान हेंवन मुसलमानन दिलुक मल ।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं । बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है । बाँसुरी में रुक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है । ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान जासकती हैं । इसी बाँसुरी से वह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी ती एक ही समान हैं । कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है । उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बदौलत है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है । जिन व्यक्तियों

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण-काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

निजामउद्दीन  
( निजामउद्दीन )

१२-१-१९५४

DR. NIZAM-UD-DIN  
Prof. of Hindi  
Islamia College, Srinagar  
(Kashmir)



contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter

### TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्योऽपि तद्गुणैः ।  
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

*etad īśanam īśasya  
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaih  
na yujyate sadātma-sthair  
yathā buddhis tad-āśrayā*



“मुरली गब्दा गव असि कनन  
वनन छि राधाकृष्ण है प्राव’

“مورلی شہادہ اسے گوکنن۔ وشن چکر را دھا کرشنہ ہے سو

### TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead; He is not

affected by the qualities of material nature, even though He is in

of the Lord do not become influenced by the material qualities.

# ترتیب

شمار	مطلع	صفحہ شمار	مطلع	صفحہ
۱۔	قطعہ: ۱۔ اگر چھپے فلوں سم	۲۲۔	قطعہ: شبیبہ وچھم	۳۶
۲۔	کرشنا کرشنا	۲۳۔	۱۳۔	۳۷۔
۳۔	قطعہ: پتاما تا کرشن	۲۴۔	۱۴۔	۳۸۔
۴۔	کرشن پتیری پاٹھ مخلوقن	۲۵۔	۱۵۔	۳۹۔
۵۔	قطعہ: پرز لوئی	۲۶۔	۱۶۔	۴۰۔
۶۔	کرشن نو در تان بجاتے ہیں	۲۷۔	۱۷۔	۴۱۔
۷۔	نوبصورت سانبہ آنکھ	۲۸۔	۱۸۔	۴۲۔
۸۔	قطعہ: شہکار قطعہ	۳۰۔	۱۹۔	۴۳۔
۹۔	۹۔ " تریہ یا ستمہ کھولتھ	۳۳۔	۲۰۔	۴۴۔
۱۰۔	۱۰۔ پریمیم شرمیرا	۳۲۔	۲۱۔	۴۵۔
۱۱۔	۱۱۔ چانہ پریمک زوگ	۳۴۔	۲۲۔	۴۶۔
۱۲۔	۱۲۔ میون دل اوس	۳۵۔	۲۳۔	۴۷۔
			۲۴۔	۴۸۔



۷۸. گپاڻي وري چھ ۴۹. قطعہ:۔ کشتي چرن
۷۹. قطعہ:۔ تختي زور پيس گور ۵۰. رادھا چھ آمتر
۸۱. اندس پيچھ۔۔ واصل ۵۱. ڈالہ شوبيا ميون دل
۸۲. گپو چھني تہ گرس ۵۲. گيتي ميسن بالکس نش
۸۳. پير کھ لود کشتي ليلا ۵۳. شري کشتي امانک و شير
۸۴. ار کران پوزا کشتي جي ۵۴. ونہ ون بستي توي
۸۵. تصوير کشتي پوزا ۵۵. روپ ميون اوس
۸۶. کشتي سدا ما ۵۸. جے جے ميسن منز گران
۹۷. قطعہ:۔ اکھ سدا ماچھا ۶۰. نظم کشتي جي
۹۸. کشتي گودون سميت ۶۲. قطعہ:۔ ياکشہ ديت
۹۹. قطعہ:۔ غريبن مفلسن ۶۳. کشتي تھو رلي پر تھ زمانہ
۱۰۰. گلن ہند۔۔ کشتي جي ۶۴. گپال لچيون گل
۱۰۹. چھ برہمن دھرم گيان ۶۸. منہر و پاتھ۔۔ الہ نابد
۱۱۰. قطعہ:۔ بالسمري ہند سانہ ۷۲. کشتي۔۔ سالہ پتو!
۱۱۱. مہر باني کرے کشتي ۷۴. مہر کن وچھ

- ۵۶۔ بالہ پانس لگو تے از ۱۱۲ صفحہ  
 ۵۷۔ قطعہ :- یکدلی ہنس شہ ۱۱۶  
 ۵۸۔ قطعہ :- کئی یس نظر ۱۱۷  
 ۵۹۔ بالہ پانس لا کے جائے ۱۱۸  
 ۶۰۔ قطعہ :- وجود ک سر ۱۱۹  
 ۶۱۔ رادھا و مان چھ ناخس ۱۲۲  
 ۶۲۔ کس نام وایان ! ۱۲۴  
 ۶۳۔ مہ چھا انکار ماتا ! ۱۲۸  
 ۶۴۔ قطعہ :- ہما سا گر کشن ۱۳۷  
 ۶۵۔ ہے ! نے چھ گرھان ۱۳۸  
 ۶۶۔ قطعہ :- کرشنہ منہ رلی ۱۴۴  
 ۶۷۔ "میشرو نے پرانہ فیتج" ۱۴۶  
 ۶۸۔ گیت : کرشن بانی ۱۴۶  
 ۶۹۔ قطعہ :- "سرس کرشن اگر" ۱۵۵  
 ۷۰۔ گلیں ہند ترنم ۱۵۶  
 ۷۱۔ بالہ کرشنن بام ڈرم آگہی ۱۵۸  
 ۷۲۔ قطعہ :- بے خبر باٹھو ۱۶۰  
 ۷۳۔ شعورس لاشعورس منر ۱۶۳  
 ۷۴۔ دلن گودین و دھرک ۱۶۲  
 ۷۵۔ قطعہ :- صحی فتحہ رٹھ ۱۶۳  
 ۷۶۔ "یا مستحق یہ آدم دین" ۱۶۴  
 ۷۷۔ کرشن جی ارجن ۱۶۵  
 ۷۸۔ قطعہ :- یا دھرتی پیٹھ ۱۶۶  
 ۷۹۔ چھ بھگون ناسہ ترسن ۱۶۸  
 ۸۰۔ ستم گارو ستم کور ۱۶۹  
 ۸۱۔ کرشن کہانی ۱۷۰  
 ۸۲۔ ہرے کرشنا ! ۱۸۹  
 ۸۳۔ قطعہ :- کرشنہ چھو کتھ زنگ ۹۲  
 ۸۴۔ تقاریر ۱۸۴

۱۔ پروفیسر نظام الدین ۲۔ ڈاکٹر ملک موسیٰ ۳۔ علی محمد لنگر ۴۔ پروفیسر حسن لال ستیرو  
 ۵۔ شیوا چاریہ سوامی لکشمین جو گیت لنگا ۶۔ لالہ میلارام نجیون کوہ کج باغ





रुचाये बरी प्रियाये । लोपालम्बे कन ओछे - नर काले त्रिम साले दमाह - लाले म्बे कन ओछे

राधायि बरी प्याल' चे गुपाल' मे कुन बुछ

अज काल यिज्यम साल' दमाह लाल' मे कुन बुछ

वृन्दावन कलानायौ हृदयानन्द दायिनी,

सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेहं कुंजगामिनी ॥

اگر چھ ظون سمر بھگوانہ سندی گون  
 ترہ سپدی شو دینن دل ہیر تے یون  
 چھ تھو سندی ناو سمرن عین اکسیر  
 بناوان کیمیا اگر چھ کھوٹس سون

अगर कृपयजन सुखर भगवान् सद्य गोत्र  
 त्रय सपदी शोद पनुन दिल हेरि तय बोन  
 कु तम्य सुंद नाव समरुन एन इकसीर  
 बनावान कीमियागर कृप खोटिस स्वन

مہ نیش آو۔ بارہا آو۔ بارہا آو  
 کوڑن میانیس موندس منز پور پھر آو  
 تیس کن اکھ قلم تل یاری لاگی  
 کری اوئے دیا بھگون تر اذماو

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।  
 कौरनु म्या निस वीन्दस मंज पूर ठहरव ॥  
 तमिस कुन आव कदम तुल यार्य लागी ।  
 करिय औरय दया भगवान च अजमाव ॥



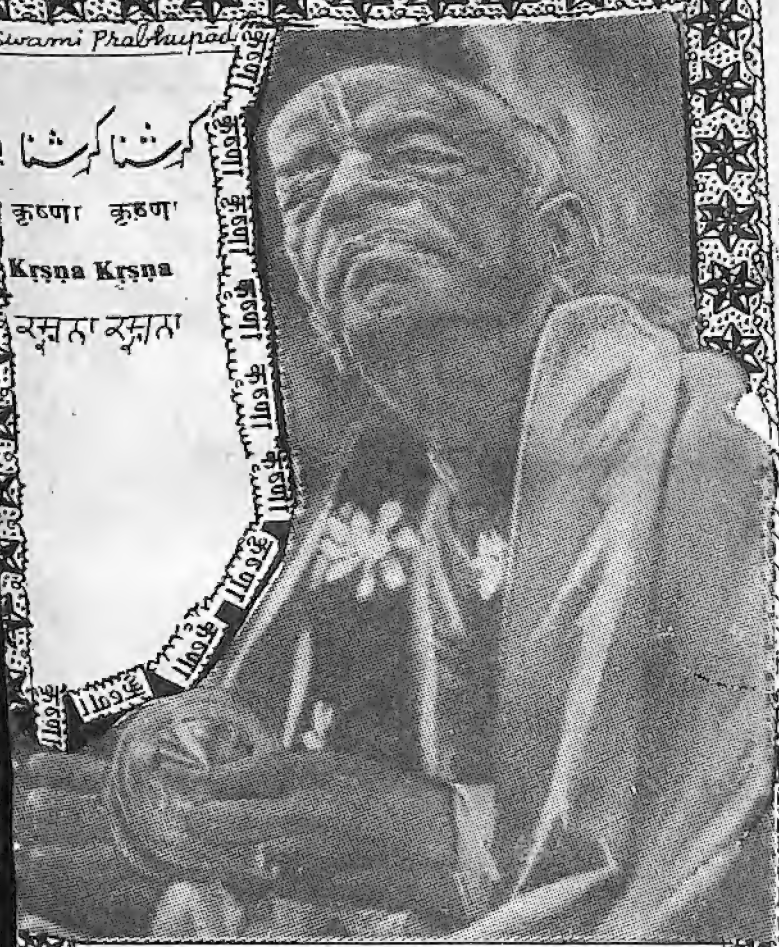
Swami Prabhupada

کشاکش

कृष्णा कृष्ण

Kṛṣṇa Kṛṣṇa

रुसना रुसना



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa means  
'all-attractive.'

What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"

پیتا مائا: کرشن - مائا پیتا سے  
 گورو سے گہیاں سے تے آتما سے  
 دلس شرو پیت - اچھن منز جاتے تم سنز  
 محبت سے خلوص پز دیا سے

پিতا مائا کृष्ण - مائا پیتا سۄی  
 گورو سۄی ج्ञान سۄی तय आत्मा सॄय  
 दिलस ओप मुत अह्नन मंज जाय तम्य संज  
 सहोबत सॄय खुलूसुच पंज दया सॄय ॥



कृष्ण पंजय पांड्य मखलूकन पनन मोल ।  
 करान हिस पों पुरिन्य गथ, तस बरान लोल ॥



# KRISHNA



کرشن پُتری پاتھو خلاقن پین مول  
کران چھس پونپیری گتھ تم برین لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پیرز لوف دست و پا چم سریه کشتن  
 دلیکیم نقشه نام سریه کشتن  
 یمو کاتیا حین پمپوشه سر کر  
 یمو ستو تخ سجاوم سریه کشتن  
 ۱- دست : آخه - ۲- پا : کھور - ۳- تخ : تخت

प्रजलवन्त्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस  
 दिलुश्य इम नकशि हाविम श्रीकृष्णस  
 यिमव 'करवाह हसोन पंपोशि सर 'कष्टि  
 यिमव सूत्य तख सजाविम श्रीकृष्णस





His  
Divine  
Grace

कृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं



# خوبصورت

● خوبصورت سائے آگنی ڈاوتے  
 گوپین دیو تو کرشن سون آوتے  
 کرشنہ دیو ٹھم ترھایہ رُوس زن ماہتاب  
 شامہ ترھاین سریہ ہیو لون دروتے  
 بیون دل اوس وار رُوس دروازہ رُوس  
 اُتھو اندر پرتھنے کوڈن ٹھہر اوتے  
 نوہستو اوڈ پوکھ کرک کو رنم نہال  
 من پرسن چم۔ دل برن چم چاوتے  
 ذکر پیٹھ تے فکر پیٹھ کرنم دیا  
 میانہ غفلت ہند ہیوتن ماناوتے  
 کرشنہ دیو یقہم تیوت رُڈی رُڈی سیرگوس  
 توتہ دو پیٹھ یقہم رُڈی گراوتے





खूब सूरत सानि आंगुन्य चाव तय ।  
गूपियन द'प्य तव कृष्ण सोन आव तय ॥

कृष्ण द्यूठुम छांयि रो'स ज़न माहताब,  
इयाम् छांयन सिरिय ज़न नो'न द्राव तय ॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़ु रो'स ।  
अंध्य अन्दर प्रछनय को'रन ठहराव तय ॥

नूरु सात्य ओ'न्द पोख गरुक कोरनम निहाल,  
मन प्रसन्न छुम दिल बरान छुम चाव तय ॥

ज़िकिरि प्यठ तय फ़िकिरि प्यठ करनम दया,  
म्यानि गफल'त्र हुन्द ह्योतुन मा नाव तय ॥

कृष्ण द्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस,  
तोति दोषथम "युथ न् रोज्यम आव तय" ॥

یوہ ترھورم، اور کرشن گودنس  
 بس کنی کتھ: کرشن گارن پراوتے  
 کرشن سہرت کر تہ چشو دلشہن  
 یوہ نہ باور چھے ذرا اندھاو تے  
 بانسری کن کن تھووم بمنزل سووم  
 فاضلا اسم نغن مہ گو صحراو تے

## شہکار

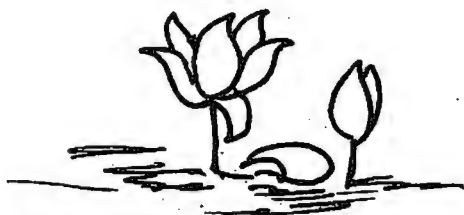
مہ گو بیدار بخ از گوم بیدار  
 وچھم دیدو کرشن تس سریر انہار  
 سہ گورمت و مہستہ گارن پوز صغم ہو  
 دتن زلکش پنن اکھ حسن شہکار



योर् छोरुम ओर् कृष्णन मोरनस ।  
बस कुनी कथ—कृष्ण गादन प्राव तय ॥

कृष्ण स्मरन करतु चक्षमव डेशिहन ।  
योद न बावर छुय जरा अजमाव तय ॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मजिल सुरम ।  
'फाजिला' आंगुन म्य गव सहराव तय ॥



म्य गव बेदार बरुत अज गोम बेदार ।  
बुछुम दीदव ; बुछुम तस सिरिय अनहार,  
खुदा सबन कृष्ण गोर सोंच कंथि कंथि ।  
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार ॥



میرا یہ پیچہ کرشنہ دیا

پریمہ پتر میرا سو گیا بچ کنو مثال  
جلو ماوتھ بختہ بد کر تھن نہال  
بالہ کرشنا اتس یہ پتر تھنہ دتھہ گوکھ  
قی دتم چھہ پینہ غطر ہند سوال



चिं यामत खल्यथम सथ दर्शनकि वर ।  
खोन तल वृछ भ्य सहरा कुह त संगर  
मकानुवय तय जमानुवय हलके छोट्य भम  
छहम ना वृष्ण गोशाला । भ्य यावर ॥

मीरायि प्यठ कुण्ण दया

प्रेम'हृच्च' मीरा न्व' जानुच' कुन्य' मिसाल,  
जलव' हाविथ' आर'क'च' क'रथन' निहाल ।  
बालु' कृष्ण' तस' यि' प्रिय'नय' दिथ' च' गोख  
ती' दितम' न्य' पननि' अजम'च' हुन्द' सवाल ।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانه پر سیمکاسر و ناکتیمیس لوگ سورگو  
 سر یہ من پر فون نڈن ہند نورگو  
 لجن ترانی پیرانہ سیمچ بیت آس  
 قور بہ ستو میرنہ انگ انگ طورگو

चानि प्रेयमुक जोगं यैमिस-लोग सूर गव,  
 सिर्ययि मन प्रोवुन जूचन हुन्द तूर गव ।  
 लन तरानी प्राणि समयिच रीत ग्राम ,  
 कोर्वु सव्य 'मीरायि' अंग अंग तूर गव ॥





میون دل اوس دالہ روں دہ وائے روں  
 اٹھو اندر پرتہ ہنے کوہن کٹھہر راوتے

میں دل اوس دالہ روں دہ وائے روں  
 اٹھو اندر پرتہ ہنے کوہن کٹھہر راوتے ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम, दो नैनो मत खाइयो, पिथो

Love at first Sight

خاند

شپہ کرشن وچھم دھرتی بنیل گو  
 اچھن تہندس شپہس ستی میل گو  
 وجودک ویشر تھووم بس آیتن تسو  
 کرشن پرووم مہ کیت خاند مرھیل گو

۱۔ شپہ = فلو

۲۔ ویشر = جاہلاد

۳۔ آیتن = حاضر



शबीह कृष्णुन वृद्धम धरती बुच्युल गोव,  
 अद्धन तंहदिस शबीहस सृत्य म्युल गव ।  
 वनूदुक व्युचथोवुम बस आयितन तंस्य,  
 कृष्ण प्रोवुम म्य वयुत खांदर सद्धुल गव ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम, दो नैनो मत खाइयो, पिथो





شرع کړن پوړۍ پښتیک اظهاري  
 کرشنه بھگتن شرله منترام کار پی  
 زاپدا ایچنه کرشن دشن دوان  
 دل کړن موصلم - دینی اظهاري

सुर्य करन पूजा—पञ्चुक इजहार यो,  
 कृष्ण भक्तन शुलि मंज ताम कार यो।  
 जाहिदा ! यिथिन्य कृष्ण दर्शुन दिवान,  
 दिल करुण मोसूम दिन्ही ओधार यो ॥





پرن گیتا تہ کرشنن داس سپدھ  
 سورن گیتا تہ کرشنن مائے پراؤکم  
 کری میل کرشنن لاس ستی سمرن  
 سمر گیتا سمر کرشنن مہ کڈ تھکھ

पहन गीता त कृष्णन दास सपदक्ष  
 सहन गीता त कृष्णन्य माय प्रावक  
 करी म्युन कृष्णलालस सूत्य स्मरण  
 स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मकड थल

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

येमिस पुरुषस जन्म प्याव फ्रुच पानस,  
 रटन कुन्य कृष्ण वय वोत लामकानस।  
 छुयय प्रालब्ध गनिर अक्रूर संज कल,  
 बनिय पंपोशि सर अंग अंग चे पानस॥

नोट -

वन = गंड, मुशकिल





भक्त रसखानपर कृपा

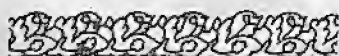
१. मर्यादा

रसखान गौर नकह कर तहस दिया  
 लोलुह वालिन कर्ष दिया किने कम चविया  
 नापे कारे चप्पस मकरे चोन दास चप्पस  
 करि ते दासस पछे ते अने मरि ज लगा



یستم بیستم کشته مهر آجین دیا کر  
به آسیانی تمس ناو سا گیس تر  
حیاتی تنز بیستم جیون ته حیدان  
سه و آنسن زنده رود پهلون غمزد

यमिस प्यठ कृष्ण महाशयन हया 'कर  
ब आसानी तमिस नाद सागरस 'तर  
हयानी तिहिजि प्यठ जीवन ति ह'रान  
सु वांनन जिद हृद 'प्रवन उमर चर



रसखानस टोठयव दया

इस खानन गोरनख क'रथस दया,  
 लोलु'वात्यन किच् दया कैहं कम छया ।  
 नावु'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,  
 करत दासस प्यठति अज म्यहरुच निगाह ॥



भक्त विल्वमंगलपर कृपा

گپالین بلو منگل کو رہِ خو شحال  
 تمس اوس کرشنہ سمرن حالتے قال  
 اوے کر نو نس منزل سواگت  
 چھ کوتاہ رت دیا لو کرشنہ گویاں !



بيمو لہرو و پزیرک قصرِ شہی  
 تمو کمر پانہ سے اُخیر تباہی  
 کرشن مہرک و وٹھ اُدھار کورناکھ  
 چھ کوتاہ جان بھگون یا الہی!

प्रिमव लुहरोव पजरुक कसरि शाही,  
 तिमव कर पानसुय आखर तबाही।  
 कृष्ण महाराज वेथ उधार कोरनाक,  
 छु कोताह जान भगवन या इलाही!

गोपालन बिल व मंगल कुर्य खुशहाल,  
 तमिस ओस कृष्ण स्मरण हाल तय काल।  
 अवय करनाव्यनस मंजिल स्वागत,  
 छु कोताह रत, दयालु कृष्ण गोपाल ॥



फलवालीपर कृपा

मीबो वा जिनो बختे बुद्ध अहं ना नैन  
 कर्त्तुं शनैः समन अस् तस पुत्रात्ते दिन  
 पितृत्वे ममोत्तमं नृपदं नृपत्तुं कर्त्तुं शनैः रङ्ग  
 हवोत्तमं नृपत्तुं नृपत्तुं नृपत्तुं नृपत्तुं



چھ کردارک تھفر و لیود کر تہنہ بھگتس  
 تہمس گیاچ تیش پانس اندر مس  
 چھ اوگون تہنہ تہ دور تہ دور  
 تھوان بھگون پیرش تہ تہ پانس

छु किदाहक यजर व्योद कृष्ण भक्तस,  
 तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस,  
 छि अवगुण तस निशे यच्च दूर यच्च दूर,  
 थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त वड अख नाजनीन,  
 कृष्ण स्मरण ओस तस पूजा तु दीन ।  
 प्रथ मेवस मंज द्रांष्ट्य गव तस कृष्ण रंग,  
 होवनस तम्य मुख पनुन कोता हसीन ॥



سَوَدَاسِ کِشَنُ بَخِشَتہ گیانِ دِھیانِ  
 تَشَنُ ہر دُن گو سہ عَرَفانِ بَاکِرانِ  
 کِیَاہ گُزہی کَم یو دِمیہ تے ساگر کِرکھ  
 لکھ مہ مَنزِو مِیخہ آسہن تارِس ترانِ



کرکھ یوڈ کرشنہ سودا کن پنن دل  
 مگر سودا بنن دو ان منز چھ مشکل  
 کرنی ما اوہ بھگون بخت بیدار  
 ملے کر کرشنہ بھگتی بن تر فاضل

करख येद कृष्ण सोदा 'कुन पनुन दिल,  
 मगर सोदा बनन दुन मंज छु मुशकिल,  
 करो मा ओर भगवन भक्त बेदार,  
 मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च फाजिल ॥



सूरदासस आनुय गाथ

सूरदासस कृष्ण वचनुय ज्ञान ध्यान,  
 तइनु हृदयन गो सु हरफान बांगरान ।  
 क्याह गछी कम योद म्यते मागर करख ।  
 नुख म्य मंज्य आसहन तारस तरान ॥



श्रीकृष्ण-चरण

کُشَنہ اچوئے نَقشہ پاچھم شَوڑ مَن  
 چھس اَوے کِن دین و دھچ و تھ سَو رن  
 پی کَران لچھ مَنزلن ہنر و تھ کُٹم  
 چھیکرس چھس پانہ از منزل بنن



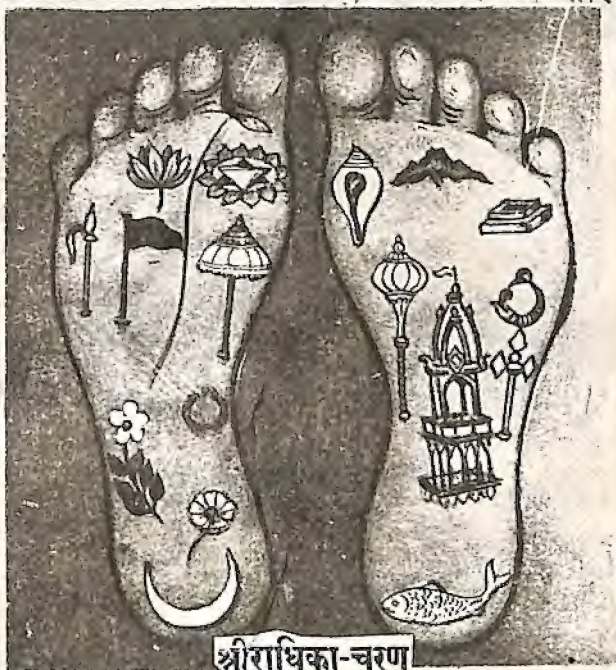
شری کرشنی چہرن سادھن کلس پیچہ  
 مگر یارس چھلان پینو اٹھو کھوہ  
 یہ کرنس منز تمبس حاصل پرستنا  
 یہ گو پریمک خلوصک آخری حد

نوٹ :- ایار: سدا جیس کن اشارہ :- پرستنا: خستی، ہمت

श्रीकृष्णचरण सादन, कलस प्यठ,  
 मगर यारस छलान पन्थव अथव खुर।  
 यि करनस मंज तमिस हांसिल प्रसन्नता,  
 यि गव प्रेयमुक, खलूमुक मोखरी हृद ॥



कृष्ण! चोनुय नकली' पा छुम अच मन,  
 छुस अवय किय दीन' धर्मच वय स्वरन।  
 यी करान लछ म'जिलन हंज वय क'हु'म,  
 छेकरस छुस पानु अज म'जिल बनन ॥



श्रीराधिका-चरण

॥ देवाच्चे अमर कर्शने तो दाहे अनं नान  
 प्रेते मनस पिये नाने नैन बाहे दितुं ग्यान  
 मरुम प्रेक्षन बाने दीन दीत नृ बक्ष दल  
 तम गाशे शस थिरे दूर पिये तो अति प्रेक्षान



# پمپوشیا

دَالِ شَوْبِیا میونِ دِلِ مودِلی دَرَس  
 بس یوہے پمپوش پھول میانس سرَس  
 دِلِ چیمِ دِلِ پمپوش پادَن ہندِ عکس  
 دَا لَکڑاوتھ کھورَن میوٹھ کرس

پمپوشی پاद

हालि शूब्या म्योन दिल मुरलीदरस,  
 बस योहय पम्पोश कोल म्यानिश सरस ।  
 दिल छु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक'स,  
 डाल्य गुजराविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि आमुच कृष्ण वतव, डाल अग्निन जान  
 प्रथ मैजिलस प्यठ जानुबुन्य न बागि दितुन जान  
 महरुम पुरुषण वानु, दयन छुतु न बखशुन दिल,  
 तिम गाशिनिश यच दूर प्यमति अग्न्य त परेजान

## گیشوم



گیشیمس بالکس نش ندون شریان  
 پیری چھا! حور چھا! اوتار انسان  
 اچھن ورنمل، ڈیکس نندرم موکھس گہ  
 پہ وچھتے کامہ دیوس ہوش راوان



سری کرشنا! منک ویر باوفا دم  
 پتا ماتا چھرہ ہم پرتیج دیا دم  
 یمن میانن گوئن پھر امرتیک سنگ  
 امی ستو زنبہ پھیر کا سُم بقا دم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बाबफा दिम  
 पिता माता छुहम भ्रमच्य दया दिम  
 यमन ध्यान्यन गुणन फिर भ्रमनुक सण  
 अभी सृत्य जन्म फुयर कासुम वका दिम



ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान  
 परो छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।  
 अछन वुजमल, हयकस चन्द्रम मुखम गाह  
 यि वुछयय कामदोवस होश रागानि ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनरस्तत्त्वदृशिभिः । १६ ॥ अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।

अन्तवन्त इमे देश निरयसोकाः शरीरिणः । अनादिनाऽप्रमेयस्य तमाद्यध्वस्य भावन । १८ ।



سَمْعُ تَوْبَىٰ كَوَيْبِ شَامِ اِهْ تَرَو  
 بِالْاِ كَرِشَنْسْ كَرُو پُوشَه پُوزَا  
 پُوشَه پُوزَا كَرِ تَه لُولَه شَبَاهِ پَرُو - بِالْاِ كَرِشَنْسْ كَرُو پُوشَه پُوزَا  
 بِالْاِ كَرِشَنْسْ كَرُو پُوشَه پُوزَا



अज्ञो नित्यः आश्रितोऽयं पुराणा  
न हृष्यते हृष्यमानो न हृष्यते

रूप म्योन ओस मनहंमी सत्य नार ज़न,  
जमहरीरुख्य पाठ्य शेंहलीव सोचनन।  
तनहरास्त-मन छु ज्ञानुच चेंनुवन,  
चेंनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन ॥

रूप म्योन ओस मनहंमी सत्य नार ज़न,  
जमहरीरुख्य पाठ्य शेंहलीव सोचनन।  
तनहरास्त-मन छु ज्ञानुच चेंनुवन,  
चेंनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन ॥



(बनुवन)

सम्यतवी गुपियव शालुमार हय तरव,  
बालकृष्णस करव पोशि पूजा ॥  
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

कदाचि-  
न जायते म्रियते वा  
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।  
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।

گوگلَس سارو سے زینہ زولہ کرو۔ جاپہ جاپہ ہے کرو نہ در س سال  
پریمہ سریمہ بانسری لولہ تھان برو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

الفنج مورتھ پتھ شریس گرو۔ لولہ والین دپو پتھ برن مے  
مایہ ہوت اکھ قدم تل پڑو چھ مامرو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

مالہ لوگ پریتس پتھ پھن مازرو۔ سارنہ دل تہ شل انچھ لوشن  
گیونہ لچ آہ جھو۔ نرنہ لاکیم سرو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

حسنہ اکاشہ کن لعل و گوہر ہرو۔ تار کن فاضلا شولہ برکاش  
دیوین گوڑھ ون پانہ از تراو رو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای



अच्छेद्योऽयमदाहोऽयमवलेद्योऽशोष्य एव च ।

नित्यः सवगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

॥ : ॐ नमः शिवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गुकुलस सायंसय जित्तिनिज्जलाह करव,  
जयि जायि हय करव चन्दरमस साज।  
प्रेयम स्नेह बांसुरी लोलु थालन बरव।  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

उत्फतच मूरथा यथ शरीरस गरव,  
लोलुवात्यन दम्बि यथ बरिव माय।  
मायि हेत अल कदम तुल च् बुछ मा मरव,  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

मेलु लोण परवतस पथ व्युहुन मा जरव,  
सारिनय दिल तु शिल अज छि तोशन।  
ग्यवनि लज्य आबु जुय नवनि लग्य यिम सरव,  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

हुसन् आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,  
तारुकन 'फाजिला' शोलि प्रागाश।  
दोवियन गेछ वनुन पानु अज आवि रव,  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

न्यन्ययाति संयाति नवानि देही ॥२२॥

तथा शरीराणि विह्व जीर्णानि नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय  
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।



# جے جے!

منس منز گردان بانسری ہنر موڈ لے  
 یہ لے بالہ کرشنا چھ چانی تہ جے  
 پزیک آلوہ گو و ن منز پیا پے  
 یہ چانی چھ بڈ مہ بانی تہ جے  
 دو دک شریہ تہ امرت چھ کھاسن بزان  
 چھ اتھ سلسیل رو آنی تہ جے  
 مو کھس پیٹھ گلاب پانہ پیرمی تہ چھ  
 نہ کہنہ چھ بکر لہ نہ ثانی تہ جے  
 دئی کم گڑھاتھ پانہ منزل گڑھان طے  
 پئے گون کران پاس بانی تہ جے



किं नो गच्छेत् गोविन्द किं भयं विन्देत् किं क्लेशं भवेत् ॥

## जय जय

मनस मंज गेजान बांसुरी हुंज मोदुर लय,  
यि लय बाल कृष्णा छे चा'नी चे जय जय।

पङ्कुक आलवाह गव वनन मंज पयापय,  
यि चानी छे ब'ड मेहरबानी चे जय जय॥

दो'दुक सेह त् अमृत छे खास्यन बरान नय,  
छे अथ सलसबोल च' रवानी चे जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पानु प्रेमी चे छुय दय,  
न कांह छुय बराबर न सा'नी' चे जय जय॥

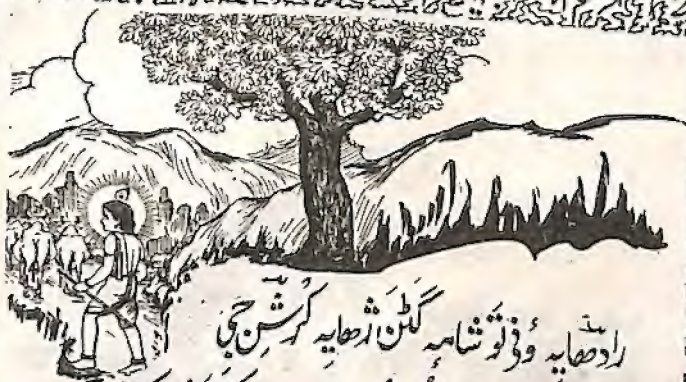
दुयी कम गच्छिय पानु मंजिल गछान तय,  
यिमय गुण करान पासबानी' चे जय जय॥

नोट : 1. सोरगुकसर 2. चे छुव 3. सिफत

4. राछ

च राज्यं सुखानि च विजयं कृष्ण न च राज्यं कलहं न काङ्क्षे ॥ न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।



رادھایہ وڈو تشاہہ گلن ڈھایہ کرشن جی  
 درشن چھہ ہاوان پانہ کیو ترپہ کرشن جی  
 تھنو نقشہ بنی گاشہ بھس غاڑ بھس گو  
 لوئس تہ ہر دس سرپہ چھہ سرپہ کرشن جی  
 یتھ جاپہ لوکن مایہ بوڑت شریہ تہ سمت خمد  
 صالح چھہ ویان بانسری تھہ جاپہ کرشن جی  
 یتھ کرپہ اتش نار تھر تریشہ ستین لوگ  
 تھہ کرپہ گنگا سپہ شہل سایہ کرشن جی  
 فضل اچھہ تس تس باگہ تھڑ لانہ سپر تس  
 یس پریمہ سانے تپر نظر لایہ کرشن جی

۳۴۔ یہ دیکھو میں دادے بھی استاد بھی پیر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی ہے۔



नित्य धारणात्तः का प्रीतिः साज्जनदन । ॥ ३६ ॥



राधायि वनिव शाम् गटन छायि कृष्ण जी,  
दर्शुन छि दिवान पान् कम्पू त्रायि कृष्ण जी ॥

थन्य नक्षशि वनिथ गाशि बुधिस गाज् ब्रमन गव,  
लोलस तु हृदयस मिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लुकन मायिब्रूत ह्येह तु समुत रबोय  
सुलहच छे वायान बांसुरी तथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ क्रायि भातश नार तचर त्रेशि हत्यन लेण,  
तथ कायि गंगा अयि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

"फाजिल" छु बखतस बागि यजर लानि स्यजर  
तस,  
यस प्रेमसानुय तीरि नजर लायि कृष्ण जी ॥

नोट -

त्रायि = नहजि २ गाज - पीड़र

३ व्युच - सरमायि

प्रापमेवाश्रयेदसानहत्त्वतानाततायिनः ॥ ३६ ॥

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः

मनुष्यः भगवतः पितृणां भक्त्याः संवन्निनस्तथा ॥ ३७ ॥







# تلا بانسری تل!

گپ لا اچھو لن گل۔ ذرا بانسری تل  
 تریہ پیارا چھ بلبُل۔ ذرا بانسری تل!

تریہ پریمک تہ لوک مجسم مجسم  
 فد اچھی تریہ کم کم۔ ذرا بانسری تل!

نبس پیٹھ سلی کور تمنا ستارو  
 قدم تھو قدم تھو۔ ذرا بانسری تل!

تریہ پرتو مہ تر و تھ مگر تھ تھ تھ  
 گجس چاہنہ مائے۔ ذرا بانسری تل!

۱۔ ذرا = ہنہ ۲۔ نب = آسمان ۳۔ تمنا = شوق ۴۔ پرتو = جلو





گُلن منز ہر گوا، یتو گاشرو ول  
اچھن میل تو مل، ذرا بانسری تل!

یمن گوین منز تہ موہری دتھ شہ  
تمو کوڑ دئی لہ، ذرا بانسری تل!

ٹر بالک اوستھا تہ شو بھاچھ غم تھ  
ٹر لکھتھ حقیقتھ، ذرا بانسری تل!

کشی ہش کشش چھ تہ اتھ بالہ پانس  
ٹر مرکزہ پانس، ذرا بانسری تل!

دہا سہ بہتو اسہ تھو و از لو تھ دل  
چھ فاضل تہ مایل، ذرا بانسری تل!

۱۔ شدہ پھوکھ ۲۔ لہ۔ لہ۔ لا۔ انکار ۳۔ مرکزہ ۴۔ لو تھ۔ لو تھ دو تھ

۴۴ قبیلوں کو غارت کرین جو بستر، ہوں ورن ان کے پاپوں سے زیر و زبر



॥४४॥ मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गटन मंज हुरधर गव घितो गाशरो वल्य,  
अछन मेलतो मल्य, जरा बांसुरी तुल ।

यिमन गुपियन मंज चै मोरली दितुथ शह,  
तिमव कोर दुयो लह, जरा बांसुरी तुल ।

च' बालक अवस्था, चै शोबा छय अजमथ'  
च जगत'च हकीकत, जरा बांसुरी तुल ।

क'शिश हिश कशिश छय चै अथ बाल पानस,  
च मरकज जहानस, जरा बांसुरी तुल ।

दमाह सानि बेहतो, मै थोवमय लिविथ विल,  
छु 'फाजिल' चै मायिल, जरा बांसुरी तुल ॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर

दोषैरैतैः कुलमानां वर्णसंकरकारकैः ।

जनार्दन । मनुष्याणां उत्सन्नकुलधर्माणां उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥

# منزل پانچواں



آلہ - نابذ - تریر - بادم چھیکو  
 لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از و لو  
 دیشنگ و انس مہر روم از و  
 لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از و لو

ہی تہ یمبرزل تہ جافری تے گلاب  
 یامن پیمپوش وری کیو آفتاب  
 یم دین کری یاد تم گل لاگیو  
 لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از و لو

دوسرا دیہائے

لین جے نے کہا

ایجو از جن کا دیا کھایہ رنج و ملال تو علم و سوز دل کہیں طبیعت نہ ہال



अनायासं विदुः सख्यं युक्तं निर्विकारं सज्जनं ॥ २ ॥ ॐ



प्राल, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो  
 लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज धुलो ।  
 दर्शनुक वांसन में हृदुम आरिजो,  
 लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज धुलो ॥

॥ ही तु यम्बरजल तु जाफुर्य तय गुलाब,  
 योसमन, पम्पोश, विरिकैम्य आफताब,  
 यिम दयन कैर्य पाँदु गुल तिम लागयो,  
 लोलु बैर्यत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तुं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।

कदमलामिदं विषमै समुपस्थितम्

कुतस्त्वा

卷之五

11811

मधुसूदनः

यमिवाच

मिद् वाक्

विभाजन

1

میانہ واران سپنہ کین پیجرن اندر  
اکھ دیچ کوٹھر چھ پٹھر زن کھنڈر  
چانہ باپتہ چھم روتھ تھو مشربہ  
لولہ بڑتو کرشنہ لالو اندر لولو

سریہ ہوکھ، نڈنڈم ڈیکس تارکھ جڑتھ  
ہرنہ چشمن زن زنہ چھ امریت بڑتھ  
دل چھ لم گاہے تہ تہتم روبرو  
لولہ بڑتو کرشنہ لالو اندر لولو

چانہ ویرے کوکلی منزل ژھنڈم  
وڑی دتم جمنایہ بھو بھو پے تھوم  
در اصل چھم کس مہ چنے بھستجو  
لولہ بڑتو کرشنہ لالو اندر لولو

ایضاً

۵۵-۵۶ لولا کے فاتح دشمنان مڈھو مارا مجھ سے یہ ہوگا کہاں۔



यानिव हत्वा न जिजीविषाम-  
स्तोऽबस्थिताः प्रभुमेव धार्तराष्ट्राः ॥ ६



## سالہ پتو!

کرشنہ گوپالہ! دماہ سالہ پتو      سریرہ میشالہ دماہ سالہ پتو  
 میانہ امالہ! چھ مشکل بے رنجی      وہنی کوو وڈالہ دماہ سالہ پتو  
 انتظاری! بے قراری پیرالبس      زہ کس کھالہ دماہ سالہ پتو  
 بانسری تل! زن و سن ہتھ سلبیل      اسی ہرو پیالہ دماہ سالہ پتو  
 فاضلن تھو و من سجاو تھ بس ڈیہ کیت  
 از سلی کالہ دماہ سالہ پتو

طبیعت ہے کمزور دل نرم ہے مایہ الجھن ہے اب کیا مردِ دھرم ہے



साल् यितो

कृष्ण' गूपाल' दमा साल यितो,  
सिंघ मीसाल दमाह साल यितो ।

म्यानि अमारु ! छे मुशकिल बेरुखी,  
वोन्य कचो चालु, दमाह सालु यितो.

इन्तिजारी, बेकरारी प्रालबस,  
राह कमिस खालु, दमाह सालु यितो।

बांसुरी तुल जून वसन हथ सलसंबील,  
अस्य बरव प्यालु, दमाह साल यितो।

“फ़ाजिलन” थोव मन सजाविथ बस चै  
क्युत

अज सुली काल, दमाह साल यितो ।

नोट : 1. नसाब, तकदीर, 2. बर्गुक सर

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः

प्रच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः

न हि प्रपद्यामि समापनुद्यादु

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

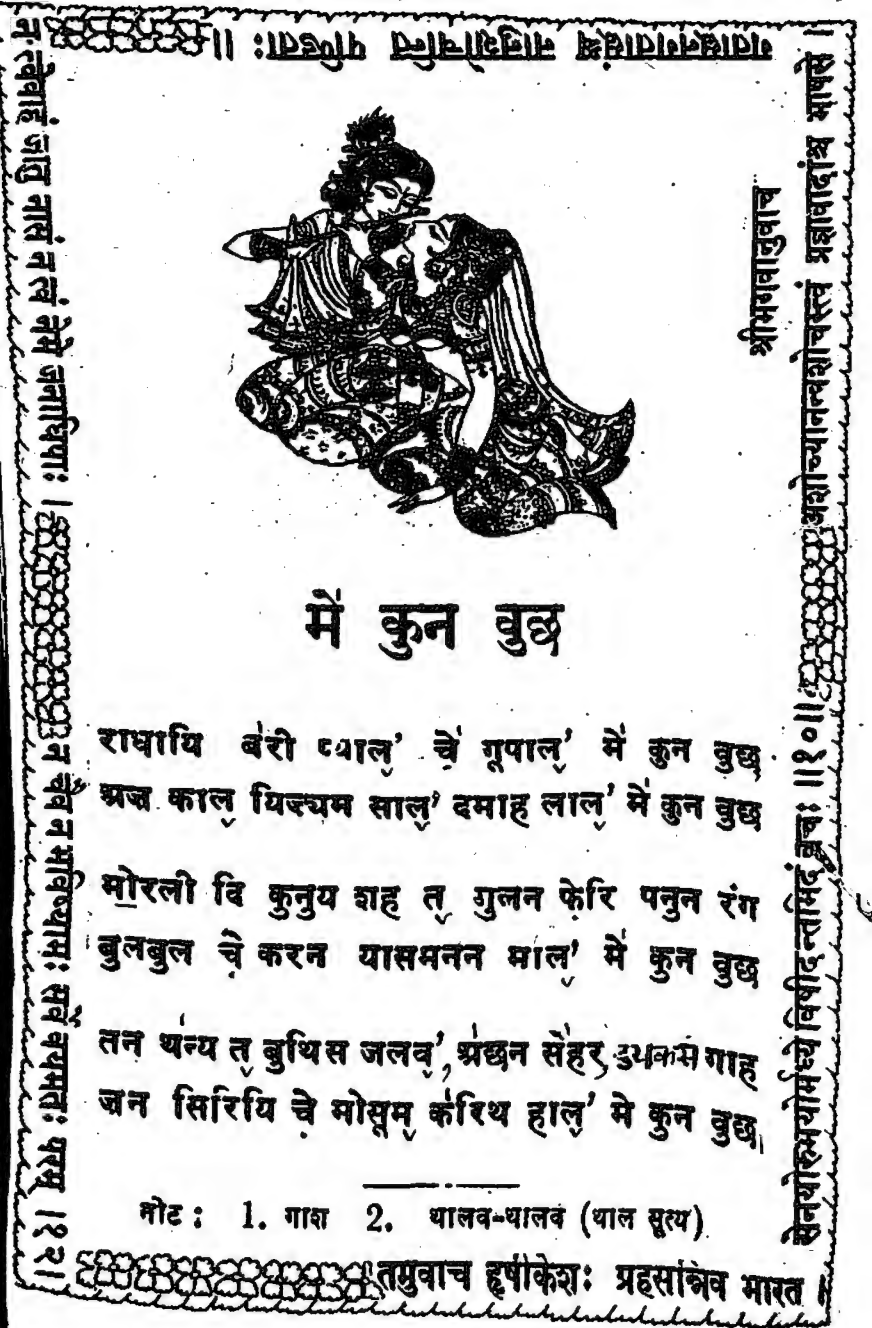
शिष्यस्तैऽहं शशि मां त्वां प्रयक्षम् ॥७॥



## مہ کن وچہ

رادھاپہ بُری پیالہ تڑپ گویالہ مہ کن وچہ!  
 از کالہ پنجم سالہ دماہ لالہ مہ کن وچہ!  
 مورلی دِ کئے شہ تہ گن پھر پین رنگ  
 ۱۔ بھوکہ  
 بلبیل تڑپ کرن یوسمن مالہ مہ کن وچہ!  
 تن تھنوتہ بٹھس جلو، اچھن سچر دیکس گہ  
 ۲۔ گاش  
 زن سرپہ تڑپ موصومہ کر تھ مالہ مہ کن وچہ!  
 ۳۔ داپہ حلقہ





श्रीभगवानुवाच

## में कुन बुछ

राधायि बरी प्यालु' चे' गूपालु' में कुन बुछ  
अज कालु यिद्वयम सालु' दमाह लालु' में कुन बुछ  
मोरली वि कुनुय शह त् गुलन फेरि पनुन रंग  
बुलबुल चे करन यासमनन मालु' में कुन बुछ  
तन थन्य त् बुथिस जलवु', अछन सेहर डथकस गाह  
जन सिरियि चे मोसुम् करिथ हालु' में कुन बुछ

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सूर्य)

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसानिव भारत ।

श्रीभगवानुवाच ॥ १० ॥ अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रह्लादांश्च भाषसे ।

गताधनतापादंश्च ताम्रयोगिनि पठिताः ॥ १० ॥

न त्वेवाहं जहृ नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।  
न चैव न भविष्यामः सर्वत्र यमतः परम् ॥ १२ ॥

گو کل بہ نمٹھ شامہ گٹن ڈھایہ وڈے زو  
 یادم تہ خفر، آلہ چھکے تھاہ مہ کن وچہ!  
 از چاہنہ کلے ٹھانہ وڈے ملکہ بہر تھ چھم  
 دامہ ڈاگر چھاکہ تہ بہ سنبھالہ مہ کن وچہ!  
 دروازہ تھا فے وٹھو تہ بہ پرتھ جاپہ کرے زول  
 بوخونہ جگر ہالہ شمع زالہ مہ کن وچہ!  
 یو دلا لہ بکری دوز تہ سنے گیلہ مہ وچو وچو  
 کنہہ واپہ کرن چھمنہ رٹھ نالہ مہ کن وچہ!  
 چھہ وکنہ گنڈ تھ دوز تہ بہ گوبی چھ نزلخان  
 زہنہ ہرنہ کھیل س منزنہ ڈر تھ تھالہ مہ کن وچہ!  
 کم پایہ چھ فاضل ڈہری کرشنہ نظر تل  
 آسن تہ آسن بہ تہ بہ پتھ گالہ مہ کن وچہ!

۱۔ زول = پڑاغاں ۲۔ بکری دوز = گستاخ۔



न हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छाधि वंदय जुव  
बादम त् ख'जर आल' छकय थाल' में कुन बुछ  
अज चानि कले ठान् वछय मलरि बरिथ छम  
बामाह च अजर चख त् बं सम्बाल' में कुन बुछ  
दरवाजु थवय ब'थ्य त्' चे' हर जायि करय जूल  
बो खनि जिगर हार' शमह जाल' में कुन बुछ  
योद लागि बुकुर्य दोर त् समय गेलि में बुछ-बुछ  
कांह वायि करुन छुमन् रटथ नाल' में कुन बुछ  
छय विगनि गंडिथ दर्य त्' चे' गूपी छि गजल खां  
जांह हरन् खेलिस मंज न् दिचथ छाल' में कुन बुछ  
कम मायि छु "फाजिल" त् श्री कृष्ण' नजर तुल  
आसुन त् न आसुन बं चे' पथ गाल' में कुन बुछ



देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।

तथा देहान्तरप्राप्तिर्धोस्तत्र लब्धुमिति । १६ ॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।

گلاہ !

گلاہ ! ذرا بیل ! گپا بنی دیوے چھہ  
جگر چھیل جگر چھیل ! گپا بنی دیوے چھہ !

ثریہ چھہ داغ سپنس مہدہ دکھ چھیم دلس چھیم  
یہ مشکل تر کر حل ! گپا بنی دیوے چھہ !

وہ نرج نار برہیہ ہش تر لا گتھ قبا چھاکھ  
شہج ترادرہ ول ! گپا بنی دیوے چھہ !

ثریہ ہسولن منز، تر یاد اسمت کر  
گنبر افنج کل ! گپا بنی دیوے چھہ !

گپا لا ! یمن سپنس ددو آخ رو دکھ  
تنگھ مئل تلکھ مئل ! گپا بنی دیوے چھہ !

۲۵ نہیں آتا کوئی لغو تر زوال ہو خواہ اس کو کچھ پائیں نہ ہو جسے نہ سمجھیں نہ سمجھیں



# गुलाला !

गुलाला ! जरा बल, गुपालन्य द्रुय छय  
जिगर छल, जिगर छल, गुपालन्य द्रुय छय ।

जे छय दाँग मोनस म्य दुख छुप, दिलस छुम  
यि मुशकिल चू कर हल, गुपालन्य द्रुय छय ।

बोजूज नारु ब्रैह हिश चू लांगिय कवा छुल,  
शिहिज चादराह बल, गुपालन्य द्रुय छय ।

चू बेह मसवलन मंज, चू हाँदिल समुत कर  
गन्यर उल्फतुच कल, गुपालन्य द्रुय छय ।

गुपाला ! यिमन सीनु द'छ आख रुदिल,  
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालन्य द्रुय छय ।



अन्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशंसिषुमर्हसि । २७ ।  
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।  
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचिषुमर्हसि । २७ ।



۱۔ تھنڑو روپ پیس گور کھیٹھ کرشنہ گپالا  
 ۲۔ تس کھنڑو ڈپکس درہ تہ دس گونہ ملالا  
 ۳۔ ماتاہہ ژبہ موصوبہ وونے لفظ مکھن پچور  
 ۴۔ اچھہ یٹھنہ لگی بارکا اچھکھ حسن کمالا

۱۔ تھنڑو = مکھن ۲۔ گور = گوری بائی ۳۔ درہ کھیٹھ = ملالہ کرشن ۴۔ پچور = چور  
 ۵۔ اچھہ لگنہ = جسم بد لگنہ ۶۔ حسن کمال = Beauty Incarnate

۲۹۔ سن اپنی عقل کے لوگ کا حال سن بہت اہمیت میں جس سے کہتوں کے گن







## تھنہ ثور

گبو، دود تہ گرس کیاز تہ نہ اندیشہ کرتھ چوتھ  
 بھگوانہ! پھند باگہ بورت شیجار لکن دوت  
 زو منگتہ بھگہ منگتہ تہ ریح منگتہ دل وجان  
 موصومہ لکے کیاز اسی ثور مکھن کھیوتھ!

۱۔ عقلا اندیشہ کرتھ = کھڑی کھڑی ۲۔ ریح = آتما ۳۔ مکھن = تھو

لگا ہوں سے پہلے یہاں ہوں وجود یہ چھینچ میں کچھ عجیب ہوں وجود



आचार्यवत्पश्यति कश्चिदेन  
 आचार्यवत्पश्यति कश्चिदेन  
 ॥१६॥

پیرکھ یوڈ کرشنہ لپلا گیان لاری  
 اہنکارک یوہے سپما ب ماری  
 یہ حاصل گوئی تہ سپد کھ کیمیاگر  
 یوہے گون ساگرن منتر تار تاری

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;  
 अहंकारक योहय सीमाब मारी ।  
 यि हांसिल गोय त सपदस कीमयागर ,  
 योहय गोण सागरन मंज तारु तारी ॥

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याजि त्रै अदेश करिथ चोष,  
 भगवान् ! युहुंद बागि केरुत वोहजार लुकन वोत,  
 जुव मंगत, जिगर मंगत, च रह मंगत दिलो जान,  
 मोसुस ! लगय क्याजि असो चूरि मक्खन ख्योष,

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत

कश्चिदेन  
 आचार्यवत्पश्यति

कश्चिदेन  
 आचार्यवत्पश्यति  
 ॥१६॥

کران پوزا کرشن جی دوستاں  
 سدا اکھ فقیرا تے کرشن شاہ  
 وفاداری، دیانت، نیک سیرت  
 خلوصک شریہ تہ جذب جاذبیت  
 اکٹھکن نے مہا بھارت بیٹھکن!  
 چھ دوشوہ منز دیوان ملکتی سہ لوکن  
 بجز گوئی تہ عرفانک تضر پی  
 ہشترس نش ہشتریاں تہ یارس  
 مگر وچھتوہ یمن دوش منز فرق چھا  
 تہماں باکراون پوز محبت  
 کرشن جی چھے کران داسن عنایت  
 اکٹھکن تھوہ قتل غارت بیٹھکن!  
 پتھے بخشاں ست آکاھی چھ بھگون  
 تھوں قائم پتھی گوہ چھے کرشن جی

کران पूजा कृष्ण जी दोस्तानस ,  
 हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस ।  
 सुदामा श्रुत फकीराह तय कृष्ण शाह ,  
 मगर वुछतव यिमन देन मंज फरक छा ।  
 वफाद्वारी, दियानत, नेक सीरत ,  
 तमामन बागरावान पोज मुहवत ।  
 खुलूसु क श्रेह तु जजबुच जाजिबियत,  
 कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत ।  
 अकिथ कुन 'नय'—महाभारत विविथ कुन,  
 अकिथ कुन 'थन्य'—कतुल, गारत, वियथकुन,  
 छु दुहवन्य मंज दिवान ओदार लूकन,  
 यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन ।  
 बजर गव ई त ईफानुक थजर ई ।  
 थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी ।





भगवान्ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।



کون



# کرشن سدا

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا  
منیر اوس بالہ پانک تس سدا

بمن اوس شریلہ منر یارانہ یارز  
کران تھہ پیٹھ رشک اس پانہ یارز

سدا عمر منر برو نہ کن پکان گے  
کرشن اوتار تس پیٹھ ایشور دے

سدا اکھ گرتستی سادھ بلکل  
کرشن اوتار مہراج مالک کل

کرشن اوتار گو مشہور عالم  
یوان اسی درشنس تس سادھ کم کم

کرشن سدا قصہ چہ پندوستی تہ یاد اوتار ہند اکھ تارنجی تہ یوشون اپنے تہ

۳۔ تراقص کیا ہے لکھ اس پر نظر نہ جی ڈ لکھا اس کی تلمیذ کی





سدا ما ووتھ ملاقات کو ترھ مہ سپدن !  
 نصیبس لیکھتہ میانس کرشنہ درشن !



تیاری کر سدا سن زیمہ سفر ج - ٹلن ستی تحفہ پھچہ بیل تملج  
 پکان کو تھاکھ کڈان گو بر ونہ پکان گو - کڈان و تھ ا لقیع زنہ ماتھکا گو  
 کرشن وچھنک تمن تاس دلس پیچہ  
 تہ اتھو شوقس اندر ووت منر لاس پیچہ  
 اچانک کرشنہ لاس گو یہ گوشن - سدا ما از بیم من چھم مہ توشن  
 سدا ما او در بار س اندر تراو - کرشن ہراج یورے انہ تس دراو

رلوایتھ چھ زسدا اس اوس تحفہ پھچہ منر مہ بیتھ تہ چہ علاقائی زبان منر سدا ناں چھ

وہ بولیں گے ناغنی کو لیاں لکھتے ہیں کہ اس سے بڑھ کر کوئی

وہ بولیں گے ناغنی کو لیاں لکھتے ہیں کہ اس سے بڑھ کر کوئی

त्वां महारथाः ।

मंस्यन्ते

॥ दुपयं

ॐ भगवद्

**THE**

118211

212



संभावितस्य चाकीर्तिर्मणादतिरिच्यते

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्



اون با شان و شوکت پور حشمت - پھ چھنا بالہ پاک شریہ الف  
 سدا کھور کرشن پانہ بخش  
 کران ساری رشک تس نیک بخش  
 پیاری بخش بہتہ اوتار وقتک - پیاری کھو چھس سدا یاد وقتک  
 اکس ستر اکھ بہتہ لول یا گراوان - یہ دشتہ چھی وزیرن ہوش روان  
 سدا سن بیالو تو ملیج ڈالو کڈ نئی  
 کرن پیش کرشنہ لالس نس تھنی تھنی

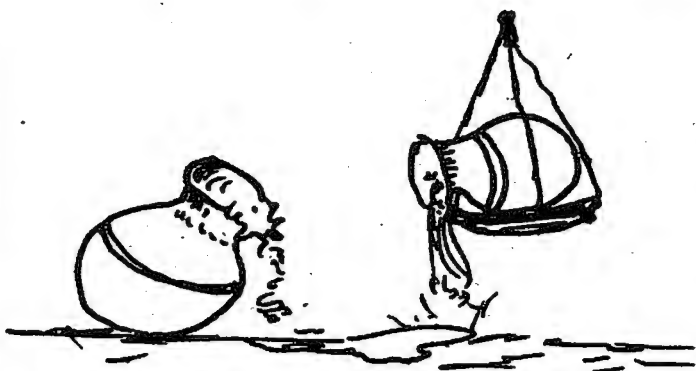


کرشن لالس موٹھ کپتھ سادہو او - کھوان کو تہہ کران انس نہ ٹھہرو

۳- مرے کا تو بیامے کا جنت میں گھر ہے اگر جنت جائے تو دنیا کا ہوسر

एषा केचिद्विज्ञासांख्ये बुद्धिर्यो त्विमां भृशु।  
 बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥

मोनून बा शान् शीकत पूरि हशमत ।  
 यि छुसना बालु पानुक खेहे त उलकत ।  
 मुदामा खोर कृष्णन पान् तस्तस,  
 करान सारी रशक तस नेक बखतस ।  
 यपोयं तस्तस बिहिथ अवतार वक्तुक  
 हुपायं किन्य छुस मुदामा यार वक्तुक ।  
 अकिस सूत्य अख बिहिथ लोल वांगरावान  
 यि डोशिय छी वंजोरन होश राखान ।  
 मुदामन व्यात्य तोमलुच डाल्य कंड नेन्य  
 करुन पेश कृष्ण लालस युस थनी थन्य ।  
 कृष्ण लाजस मोठा ख्यत स्वाद छुव आव  
 ख्यवान गव माह करान आसस न् ठहराव ।



इतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

तस्मादुचिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥ जयजय लालामो जयजय



کرشن لالہ پر تڑھس سو حال احوال۔ زمیں باجیں مار زلت رو پیہ تے مال  
 سدما ونہ لوگ بس دو کہن چہم۔ چھ اتھ منز تھ گذران سات کیوم  
 سوخن زیٹھان کے دفتر بڑتھ آئے  
 انتھ پٹھن نہ روزان راز سر آئے



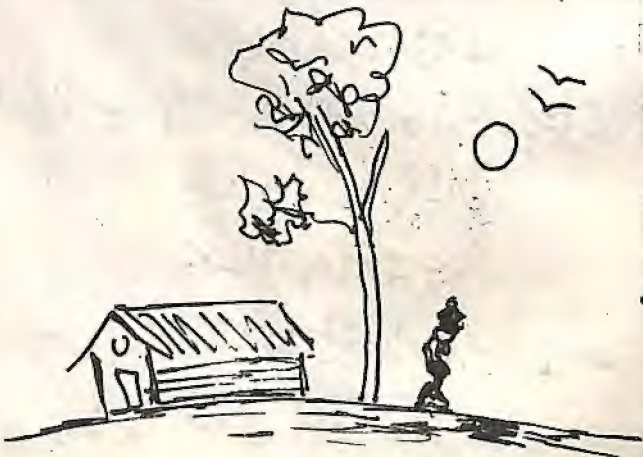
سدما کرشنہ لالہ ستو ہمدم  
 سدما تس نہ گربارک کہنے غم  
 سمے کافی گڑھاں اتھ کاروبار۔ ہوان روختھ چھ اخیر یاریاں

ہم نہ کو شش ہو اس میں کوئی رایگان ہوا رہنے میں اس کے رکاوٹ کہاں

यासिमां पुषितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।

वेदवाद्गताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः । ४२ ।

कृष्ण लालन प्रहस सोर हाल ग्रहवाल,  
जमीन, जायुन, जिरात, रोपयि तय माल ।  
मुदामा वननि लौग "बसडोकुहन छम,  
छि अथ्य मंज सथ गुजारान साथ तय दम ।  
सोखन जेठान गेय दफतर बरिथ आय  
अत्यथ पथ कुन नु रोजान राज सिरसाय ।  
मुदामा कृष्ण लालस सूत्य हम दम  
मुदामा तस नु गरबारुक कुह्य गम ।  
समय काफो गछान अथ कारुबारस,  
हवान रोखसथ छु आ'खु'र यार यारस ।



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

कुरुनन्दन । बुद्धिरेकेह व्यवसायात्मिका भयात् । स्वल्पमभ्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।



کراں روخصتہ کرشن جی تہس فقرے۔ سدا س ظون ز شری اسن مہ بیکس  
 پھران کوتہ سدا کرشن لائن۔ سواری پیچھ کھستہ دراو از گرس کن  
 دزل برو نہ برو نہ چھ سو نے دف تہ دادم  
 وناں ساری ساری سدا راجہ جو چھم  
 ولتہ زراف تہ سو نہری تاج بر سر۔ سدا از شہن ہندشہ برابر  
 گرس کہتہ ووت گاس منر سدا  
 خبر کیا چھس ز گاس منر سپد کیا  
 وچھن گا ہا کران تہس پو پیر ز کتہ۔ اُس تعظیمہ سان ماوان گرج و تہ  
 ہنہ برو نہ کن پکتہ ڈیش عمارت  
 عمارت چھا! سو رگ چھا باغ جنت  
 خبر لے دوا عیال س تم رستہ ای۔ دوان زن خور غلمان سو رگ منری درو  
 سدا ماں پانہ حارن خواب دیشان  
 یہ سوئے کیا وچھاں چھس چھسینہ زان  
 بے ما چھس رو و مت با بیگانہ گمت۔ پیچھ دو کس چھ اندہ پیلین بنیوت  
 اندہ رستہ = پیچھ کر تہ۔ ۲۔ سو رگ جنت = پیلین = شاہی محل۔

करान रोखसथ कृष्ण जो तस फकीरस  
सुदामस जोन जि सुयं आसन में बेकस ।

फिरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन  
सवारी प्यठ खसिथ द्राव अज गरस कुन ।

वजान ब्रोंह ब्रोंह छे सुरनय दफ तु डुम डुम,  
वनान सारी सुदामा राजि ह्यव छुम ।

वेलिथ जरवफ त' सोनहेर्य ताज बर सर,  
सुदामा अज शहन हुन्द शाह बराबर ।

गुरिस बयष वोत गामस मंज सुदामा,  
खबर क्याह छस जि गामस मंज सपुद क्याह

बुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,  
अमिसताजोमु सान हावान अरुब बथ ।

हना ब्रोंह कुन पकिथ डोशन अमारथ  
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ !

खबर लंज वल्य अयालस तिम चसिथ आय,  
दवान जन हरु गिलमान स्वर्गु मंज्यद्राय ।

सुदामा पानु हारान खाव डेशान,  
यि सोरुय क्याह बुछान छुस केहं नु जानान ।

ब' मा छुस रोवमुत बेगानु गोमुत,  
येत्यथ डोकस छु अज पैलस बन्योमुत ।

तथापहृतचेतसाम् ।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां

॥४३॥

क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।



وچھن آستنیو بہتھ منتر محلہ خانس  
کران پوزا، بران لول کرشنہ لاس



سدا چھس دپان آخر یہ کی کوڑ۔ یہ کی پرشس بہ پڑھنے لول سیتھ پوزا  
وڑھس آستنیو، امی کرشنن پوزا لول۔ وندس شری باڑہ مالین مول تے موج  
عبارت، باغ، مندر، فرش، محفل۔ تمی کسہ شہر عنایت یوت جبل جبل  
کرشن یس پیچھ کران چھہ مہرانی۔ بنان سون ہیر لون انسان فانی

وہ انسان ہر ہم کا گیتی ان سے کہ اسے کرم کا ندوں یہ کب دھیان بنے

वृष्टिन आशान्य विहिथ मंज महल खानस,  
करान पूजा बरान लोल कृष्ण लालस ।

सुदासा छुस दपान आखुर यि कम्य कोर ?  
यि कम्य पुरषान में प्रहृनय लोल युथ बोरे ।

वृष्टस आशान्य "अमो कृष्णन बोरुम लोल,"  
बन्दस शय बाच माल्युन मोज तय मोल ।

प्रमारथ, बाग, मन्दर फशि मखमल,  
तमो कर यिछ अनायथ यून जलजल ।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,  
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फानी ।

اکھ سدا چاہیئیں پیٹھ کر دیا مولیٰ دَرَن  
اکھ دلہ چہایتھنہ بسکیں در تہند کنول چَرَن  
یو دیشر حاکھ پائیں اندر تھاون کرشن پرلون کرشن  
شرطِ اول اتھ مقاس چھے مینج زرفیج لگن

अख सुदामा क्हा येमेस प्यठ कर दया मोरली दरन  
अख विला क्हा यथ नु बसकीन दरत हेंदु कंवेल चरन  
येद यदुख पानस अन्दर थावुन कृष्ण प्रावुन कृष्ण  
शर्ते अवल अथ सकामस क्य मनचे, रहेंचलगन ।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
विजानतः ॥४६॥  
ब्रह्मणस्य विजानतः ॥४६॥  
तान्त्संबु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥

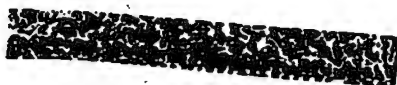




کرشن کو دوں سمت گڑھنک سمندر  
 اوتھ و اوتھ بنان پربتھ قطر ساگر

غریبن ہنسن ہند مال گویاں  
 یمن کوچہ شہر تہمن ہند لال گویاں  
 یمن زخمس اندر پیترن پیوان یچہ  
 تہمن پرشن سٹھارت فال گویاں

गरीबन, मुफलिसन हुंद माल गुपाल ,  
 यिमान को छ हंर तिमन हुंद लाल गुपाल ,  
 यिमान जनमस अन्दर प्यतरुन प्यवान यह  
 तिमन पुरुषण स्यठा रुत फाल गुपाल ॥



कृष्ण गव दुन समुत गछनुक समन्दर  
 आतिथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।





گلن ہند سمت چھانچھلاوا کرشن جی  
 عجب گلستانہ بناواں کرشن جی  
 یمن آسہ پتر پچ تہ پتر پچ دلس چھ  
 تمہن امریت کیالہ چاواں کرشن جی  
 کرستانہ پارسی تہ ہندی سبکھ مسلمان  
 نظر کنی یمن پیٹھ چھ تر اوں کرشن جی  
 دوس شیکرس منز تفاوت پشارہ  
 بشر آدنک چھ رلاواں کرشن جی

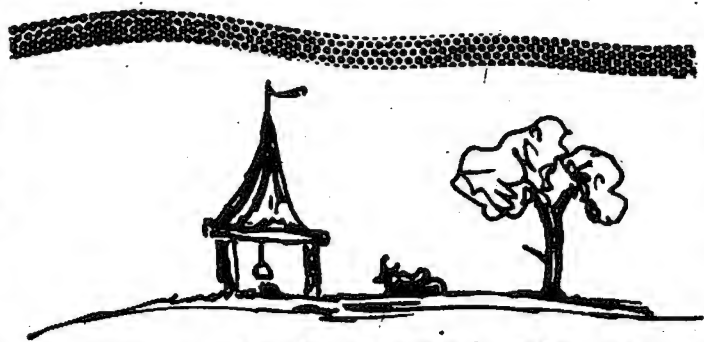
## कृष्ण जी

गुलन हूंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी  
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिम्न आसि प्रेयमुच तु पजरुच दिलस छिह  
तिम्न अमरितक्य प्याल चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्दु सिख मुसल्मान  
नजर कुन्य यिम्न प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंज इशारा तफावत  
हिशर आदनुक छुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

तदा गन्तासि निवेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।

अर्जुन उवाच  
समाधिस्थस्य केशव ।  
स्थितधीः किं प्रमायेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥



دئی ہند نہر، تفریق تڑھیٹ الیش  
چھ موہری بجاو تھ مٹاوان کرشن جی



کتن منتر چھپس تھ موہری اثر چھپس  
دلن پیم نہ نہ نہ تم لراوان کرشن جی  
یہ متھرا یہ چمنایہ گنگا یہ رادھا  
سمے گو مگر تو تھ کاران کرشن جی  
سیہ ہرہ والیو تمس نش شوہر لوہ  
کھوٹس کیمپا چھ بنواوان کرشن جی  
بران لول گوپی تمس شوہر شائے  
تمن منتر چھ دوہ دین گز ارن کرشن جی

نشری بھوان کا ارشاد ہے  
سہ مرکب دوہ پیہ ستر کوڈ دھاسون چھ بنان

॥३५॥ एकमुखाय नमः : एकमुखाय नमः

दुई हुंद जहर तफरुक्च छेट अलायिश,  
छु मुरली बजाविथ मिटावान कृष्ण जी।

कवन भंज चवर कुस तु मुरली असर कुस  
रलन यिम नु जाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,  
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शोजर लोब  
खोटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमिस श्रोचि शाने,  
तिमन भंज छु दोह दान गुजारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।

आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।



٦  
 ٧  
 ٨  
 ٩  
 ١٠  
 ١١  
 ١٢  
 ١٣  
 ١٤  
 ١٥  
 ١٦  
 ١٧  
 ١٨  
 ١٩  
 ٢٠  
 ٢١  
 ٢٢  
 ٢٣  
 ٢٤  
 ٢٥  
 ٢٦  
 ٢٧  
 ٢٨  
 ٢٩  
 ٣٠  
 ٣١  
 ٣٢  
 ٣٣  
 ٣٤  
 ٣٥  
 ٣٦  
 ٣٧  
 ٣٨  
 ٣٩  
 ٤٠  
 ٤١  
 ٤٢  
 ٤٣  
 ٤٤  
 ٤٥  
 ٤٦  
 ٤٧  
 ٤٨  
 ٤٩  
 ٥٠  
 ٥١  
 ٥٢  
 ٥٣  
 ٥٤  
 ٥٥  
 ٥٦  
 ٥٧  
 ٥٨  
 ٥٩  
 ٦٠  
 ٦١  
 ٦٢  
 ٦٣  
 ٦٤  
 ٦٥  
 ٦٦  
 ٦٧  
 ٦٨  
 ٦٩  
 ٧٠  
 ٧١  
 ٧٢  
 ٧٣  
 ٧٤  
 ٧٥  
 ٧٦  
 ٧٧  
 ٧٨  
 ٧٩  
 ٨٠  
 ٨١  
 ٨٢  
 ٨٣  
 ٨٤  
 ٨٥  
 ٨٦  
 ٨٧  
 ٨٨  
 ٨٩  
 ٩٠  
 ٩١  
 ٩٢  
 ٩٣  
 ٩٤  
 ٩٥  
 ٩٦  
 ٩٧  
 ٩٨  
 ٩٩  
 ١٠٠



١  
 ٢  
 ٣  
 ٤  
 ٥  
 ٦  
 ٧  
 ٨  
 ٩  
 ١٠  
 ١١  
 ١٢  
 ١٣  
 ١٤  
 ١٥  
 ١٦  
 ١٧  
 ١٨  
 ١٩  
 ٢٠  
 ٢١  
 ٢٢  
 ٢٣  
 ٢٤  
 ٢٥  
 ٢٦  
 ٢٧  
 ٢٨  
 ٢٩  
 ٣٠  
 ٣١  
 ٣٢  
 ٣٣  
 ٣٤  
 ٣٥  
 ٣٦  
 ٣٧  
 ٣٨  
 ٣٩  
 ٤٠  
 ٤١  
 ٤٢  
 ٤٣  
 ٤٤  
 ٤٥  
 ٤٦  
 ٤٧  
 ٤٨  
 ٤٩  
 ٥٠  
 ٥١  
 ٥٢  
 ٥٣  
 ٥٤  
 ٥٥  
 ٥٦  
 ٥٧  
 ٥٨  
 ٥٩  
 ٦٠  
 ٦١  
 ٦٢  
 ٦٣  
 ٦٤  
 ٦٥  
 ٦٦  
 ٦٧  
 ٦٨  
 ٦٩  
 ٧٠  
 ٧١  
 ٧٢  
 ٧٣  
 ٧٤  
 ٧٥  
 ٧٦  
 ٧٧  
 ٧٨  
 ٧٩  
 ٨٠  
 ٨١  
 ٨٢  
 ٨٣  
 ٨٤  
 ٨٥  
 ٨٦  
 ٨٧  
 ٨٨  
 ٨٩  
 ٩٠  
 ٩١  
 ٩٢  
 ٩٣  
 ٩٤  
 ٩٥  
 ٩٦  
 ٩٧  
 ٩٨  
 ٩٩  
 ١٠٠

॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥

## होली

अर्जुन सनार को प्रिय होली गंधान  
फुटतंग अंग अंग रंगन मंत्र रंग ब्रान  
केशने बिकेना लकड़ चो मत्तु वोल सन  
सारे ने रूस अंदर मोदी गंधान

अज हि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान  
फितरतुक अंग अंग रंगन यंज रंग थरान  
कृष्ण! यिरवना लुरव हि आयुन्य वोल सनस,  
सारिन्य रूहस अन्दर मोरली गुजान  
यमिस आसि वस जाजिमच लोलु नारन  
बिलाशक तमिस परजनावान कृष्ण जो ।

लक्षस हुब, वञ्चस मंज छु तस शोलुनावान,  
बयावान जरस छुय बनावान कृष्ण जी ।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,  
तिमन छुय पनुन जलव हावान कृष्ण जी ।

मनु'व रास्ती नजरि पौ'ज ओनु'हावान  
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी ।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।

यतो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विप्रश्चितः ।

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

निराहारस्य देहिनिः ।

विनिवर्तन्ते विप्रया ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेष्वलस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥





تسند سرہیم پیش، وڈ وڈین، وحشین تان  
 ڈھنہا چھا تمین، چھ پالان کرشن جی  
 حسد خون مار، ششمہ ہوت نار ڈیاں  
 چھ زلنگ زگت، وڈ ڈیہ پیاں کرشن جی  
 یمن تاپہ کرلو چھ میڑ شورہ کمر ڈیہ  
 تمین سیکہ لین پیٹھ چھ باران کرشن جی  
 چھیل تھ ڈھن یو کام، کرود، موہ، انکار  
 پوہتر تمین جان جاناں کرشن جی

۱۔ شہوت ۲۔ ڈرکھ ۳۔ طمع ۴۔ غور ۵۔ سرہیم پیار

۱۔ سو اس اپنے دل اور لگا مجھ میں دل تو سرشار ہوئی لوگ میں مقبل

چھوڑ کر دونا، اتر کالی کا ہے ہوو خفا اسی کہوئے عقل ہو بائمان جو زماں ہوئی عقل آیا روناں

सङ्गतान्जयते कामः कामात्कोषोऽभिजायते ॥

क्रोधान्क्रवाति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

तसुन्द स्रेह पशन, बुडबुन्यन, वहशियन ताम,  
छयनह छा तिमन यिम हु पालान कृष्ण जी ।

हसद खूंखार, खशम होत, नार चापान  
हु जगतुक जगत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे भेच शोरु करमुच  
तिमन सेकिल्यन प्यउ हु बारान कृष्ण जी ।

छेलिथ हून यिमव काम, क्रध, भोह अहंकार,  
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी ।



स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।

सङ्गस्तेषूपजायते । विषयान्पुंसः ध्यायतो प्रतिष्ठिता ॥ बोधे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥





یمن کہنہ نہ آسان یمن دل پریشان یہ تمن بیکس ہند چھ سامان کرشن جی

یہ تھن ہو مجسم چھ حنک جالک  
چھ فاضل دلس منز بساوان کرشن جی



प्रमत्तचित्तस्य ध्यायि वृत्तिः प्रवृत्तिवत् ॥६५॥

چھ برہمن بھرم - گیان ضبط راستی  
 لبی - حق شناسی تہ پاکیزگی  
 تغفل ترک - عیش و عشرت حرام  
 طمع ترک نہ تھاؤنی چیلنی من نمی  
 کرشن (گیتا ۱۲)

छ ब्राह्मण धर्म-ज्ञान जब-त रास्ती,  
 लबुन्य हक शनासी तु पोकीजुगी  
 तगोफुल तरक आश ब अशरत हराम,  
 तमाह, चल न पावुन्य छलुन्य मनहंमो  
 (गीता)

यि मन कांह नु आसान, यि मन दिल परेशान,  
 ति मन बेकसन हुंद छ सामान कृष्ण जो,  
 यि थन्य होव मुजसुम छ हुसनुक जमालुक  
 छ फाजिल दिलस मज वसावोन कृष्ण जो,

आत्मनिर्विधेयध्याना प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपायतः ।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।  
 न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥





بالسرے ہند ساز گو میانین کنن  
 چھس اوے کنی کرشنہ شبدن کن تھون  
 کرشنہ شبدو بخشتم گنگایہ جل  
 تھمہ رھم اتھ منر کو دم شود تن بدن



نوٹ:- ایشبد = لفظ ۲۔ بخشتم = دینا ۳۔ جل = آب ۴۔ پونی ۵۔ شود = خالص

ग निया सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संतपी ।

यस्या जाग्रति भूतानि सा निष्काम कृपावती भूतः ।



सुदामापर कृपा

मिह रबानी کرے کرشنن سدا : زحاکھ زگتس اندر بوڈنیک بجا  
بنان چھا یٹھ دیالو یار یارس . چھ کرشنن دوستی اُرت سراس

मिहरबानी करय कृष्णन, सुदामा !  
च छुल जगतस अन्दर बेंड नेक बहता  
बनान छा युय दयालु यार यारम  
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

बामुरी हुन्द साज गव प्यानन कनन  
छस भवय किय कृष्ण शब्दन कन बवन ।  
कृष्ण शब्दव बखशुहम गंगायि जस,  
बाह कृष्णम भव मंज कोरुम शेष तन बवन

निष्कामाणां हि श्रुता यन्मनोऽनु विधीयते ।

तदनु श्रुति प्रज्ञां वायुनां वसिष्ठाभ्यसि ॥ ६७ ॥ तसाधस्य महाबाहो निपुणतानि सर्वशः ।





بالہ پانس لگو تے اندھیمون آے

نرو وندے! سوہرلی تلا اندھ کرشنہ والے

چاہے حُسنک پرتوہ دیدن کُشش

چون پیکر جذبہ: پُتر بچہ سریرہ کراے

چاند حُصمت چاند عظمت اچاند لکھتہ - کہہ نہ سیمیں منتر تہہ ہوئی ساڈراے

نکھ = وقت

عظمت = بزرگ

ہوئے سندر میں غائب ہوں دریا ہزاراں کا وہ لکھنیز اولہ باوقار

## मोरलीदर

बालु पानस लंग्यतनय अज म्योन आय,  
जुव वन्दय ! मोरली तला अज कृष्ण वाय ।

चानि हुसनुक परतवा दीदन केशिश  
चोन पयकर जजवु प्रेयमुच सियि काय ॥

चान्य हशमत, चान्य अजमथ, चान्य छव,  
कांह न समयस मंजु जे ह्युव यी सान्य राय ।



(१) आय--वाँसि हुंद वल, (२) परतव--जलव,  
दीद - अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं

समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।

सर्वे प्रविशन्ति सर्वे तद्वत्कामा यं

स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥

यद्वत् ।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमुच्छति ॥१॥



چانہ موہ لی ہنر دے! اُفتادہ تھے  
داس پیاراں چھی تہ از کا سکھ انیالے

اکھ دمہ چشمِ نند کرشم قرار !  
عمر لوسم تری وچھان کر میون پایے

پایے چار

تہ چھہم پریمک صنم، روٹک ہرش  
سار نے لول باکر اُون چون دے

دے پشور

یوت تروہ سو ندر بناوتھ چون موکھ  
حادثن گو پانہ کار پگر خوداے

ساسہ بدی رنگ بدلو فی روم زخم  
یس زوس منتر چھاکھ بستیہ سے اکھ ہول

چانہ پترچ چھہم منس لچتر مہ چھم  
لولہ برتو! فاضلس چھے چانے

لے پیم

شری جگوان نے فرمایا  
ساروں ادھیاے

اسن ارجن! امان چھہم پانے ہونے نامتری ذات میں لول کا

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्व्यति सिद्धये । यथापि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ।

मानि मोरली हुंज द्रुय अवतार चय,  
दास प्रारान छी च भज कामुख अन्याय ॥

अस्त्र दमाह चश्मन अन्दर करतम कगार,  
उमर्, लोसम चैय वुछान कर म्योन पाय !

धुंय छुहम प्रेयमुक सनम, लुहक हर्ष,  
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

पूत चोर सोन्दर बनाविथ चोन मोख,  
हारतन गव पानु काशीगर खोदाय ।

सासुवद्यं रंग बदलवुन्य रुदिम जन्म,  
यस जुवस मंज छुल बेसिथ सुय अख बेवाय ।

चानि प्रेयमुच छिह्य मनस लेजमुच मे छम,  
लोलु बेट्यो । 'फाजिलस' छय च्यान्य माय ।

(१) प्राय---वांसि हुंद वख, (२) परतव-जलव.  
दोद-अछ,

(१) पाय—चार, (२) हर्ष—सखर,  
(३) दाय—मशवर, मोक्ष—बुध, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

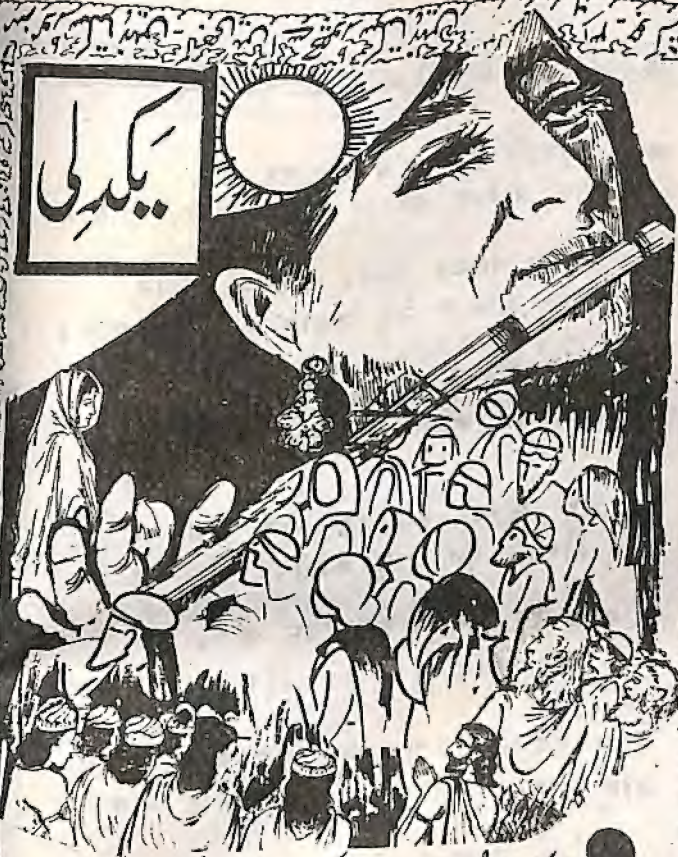
श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।

अस्त्ययं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु । ॥ ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।



یکدلی



یکدلی ہندو شہ گویاں چھے بانسری  
 یس گنن گو و منہ لوگ جے جے ہری  
 من پو مٹر یس سپد بس سے چھ شاہ  
 کیاہ مسلمان کی کر بس کیاہ کافر

۱۵  
 اسلام سورج کی تابش مزاوار ہے، یہاں جس کے جلووں سے ہر جگہ نور ہے۔ ہر جگہ جادو ہے۔

मवभूतास्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।

सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ३१ ॥

तस्माद् न प्रयत्नमि स च मे न प्रयत्नयति ॥

کُنْیِ یَسْ نَظَرْتَسْ چِه گِیَانِ وَنَانِ !  
 تَمِسِ نِش نِه چَندَالِ بَرَهْمَنِ زُجَانِ ॥  
 دُوبِی هِنْد سِیْطَاه دُورِ یَحْسَاسِ تَسْ !  
 سِه گَاوِ هَمُونِ تِه هَمُوسْ چِه یِکِسانِ وَبِنْدَانِ

(گیتا १/५)

गिता १/५

कुनी यस नजर तस छि ज्ञानी वनान  
 तमिस निश न चंडाल, ब्राह्मण ज जाना  
 दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस  
 सु गाव, हन, तय होस छु इखसान व्यंदान  
 (गीता)

यकदिलो हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी  
 यस कनन गव वननि लोग "जयजय हरी"।  
 मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,  
 क्या मुसलमानी करघस क्या का'फिरी ॥

यश्चन्द्रमसि यच्चाग्रौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ ३२ ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।





بالہ پانس لاگئے جمائے چھتی  
 کرشنہ لالو! بس بیٹی سمکھکتی  
 پانہ از گنگا یہ ہند جل باگراؤ  
 چاوتکھ امرت مہہ ہوو تریشے ہتی  
 یم نشا طس، شالماس پوس بھلو  
 زاری زاری تم لاگئے کاسے پتی

वज्रदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन  
जरा जहिर मशर, अन्दरी दिलस सन ।  
करुण आवुर पनुन आसुन न आसुन  
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्ण स्मरण ॥

**कृष्ण लालो**

बालु पानस नागद्वय जाग्रत छेती,  
कृष्ण लालो बस येती समखक तंती ।

पान् अज् गंगायि हुंद जल बांगराव,  
चावनल्ल अमृथ म्य हिव्य त्रेजे हेती ॥

यिम निशातस शालुमारस पोश फोत्य,  
चार्यं चार्यं तिम लागहय कारे पंती ।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।

अहंकार हतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥ प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ॥



نو آگر سر یہ موکھ چھے آنہ پوٹ  
 میریون پانس پرون ہندی کہہ دتھی  
 خورہند پیکرتہ تھنی پوچھے شریہ  
 نالہ رٹھنڈ اکھ دہہ روز تم اتی  
 چون آکار چھم ستن برین بہ اش  
 پیم شعور کی بر دہے تھویئے دتھی  
 دل چھ بھر سٹ تے کرو دھ از سمیک سبھلو  
 بیر اکھ اکر سٹھوان سمیک متی  
 چھی فدا پادن گیتی پمپوشہ سر  
 کھیل چھ آسن ہیچہ بہتھ آئے کتی  
 اکھ بنو موہلی دزن آدیش پوز  
 فاضلا است دوپ چھ داس ہندی

नूरु आगुर- मिर्यथिमोख लुख आनु पोटे,  
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्छ गाह वंथो ॥

हरि हृन्द पैकर तु थान्य ह्यव ह्युय शरीर,  
नालु रटुहय अख दमारोजूम अती ॥

चौन भाँकार छुम सतन वरन्यन में आश,  
यिम शऊरुक्क बर दोहय थव्यमय वैथी ।

दिल छि ब्रष्ट तय कोध अज् समयुक सोचाव,  
बैर अख अकयसुन्द थवान समयिकय मती ।।

श्री फिदा वादन गौमुख्य पम्पोनि सर,  
 ख्यन्न छि वासन ह्यथ बिहिथ आरय केतो ।

“अख बनिव” मुरली दरुन आदेश पोज,  
फाजिला ! सत दोष छु दासन हुन्द पतो ॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।

मन्त्रिणा इव ॥७॥ गोहमस्य कौन्तेय प्रभासि शशिसूर्ययोः ।

पुण्यो नन्दः पृथिव्यां च तेजश्चासि विभावसी । जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चासि तपस्विषु ॥९॥



گنگا یہ پیچھ

رَدھا و نان چھ ناتھس۔ دو د مانچھ ہو ژہ پیکر  
 درشن مہ کا لو دکھنا! چھ چانہ دو درک شُر  
 اچھ میانہ لوسہ و انس۔ گنگا یہ پیچھ ژہ پیارن  
 موہری شبد گڑھان چھ۔ گوش ژہ نتیجہ بھٹس تر  
 اُندی اُندی ژہ رقصہ باپتھ۔ گو موہر کھیول انتھ تھو  
 یم چانہ لولہ پیرتھ۔ رنگین پر تہ زلیور  
 ۱۔ دو در = فراق ۲۔ گوش = کنن ۳۔ زلیور = گہنہ

۱۰۔ سن ارجن میں ہوں زنج ہر رست کا، میں وہ زنج ہوں جو نہ ہو کا فنا۔



1881 ՀԱՅԿԱՆ ԴԱՏԱՆԻ ԵՎ ԴՐՈՍՅԱՆԻ



राधा वनान छें नाथम—दुद, माँछ ह्यु ब जे पैकर  
दशुन में काल्य दिखना! छुम जानि दूरिरुक शर ।

मल्ल म्यानि लीसु वीसन- गंगायि प्यठ जे प्रारान  
मुरली शब्द गल्लन छिम गोशन जे यथ बंठिस तर.

अन्ध अन्ध ते रक्त बापय कम्प मोरु ह्योल अनियथोव  
यिमचानि लोलु पूरिष रंगीन पर तु जेवर ॥

॥२॥ बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

نے

( نے چھ بہانے .... "مورلی شہزادہ اسہ گوکنن ورن چھ راوہا کرشنہ ہے آوہ )

گس تام وایان ! لکھ چھ دیان نے چھ ورن نے  
گوپالہ تریہیم ویدی چھ دیان  
نے چھ بہانے ..... نے چھ بہانے

تصویر آتش خانہ مجازس چھ دیان ڈول  
منز ناہ برہمن طور سنگر  
تو ورن نے ..... نے چھ بہانے

نے نغمہ شیرینی - من چھ برہمان - زوچھ زوان کل  
یتھ نغمہ پرائن ہمعرقک  
سریہ چھ بران نے ..... نے چھ بہانے

(नय छ बहानय

“मुग्ली गब्दा गव असि कनन  
वनन छि राधाकण्ठ है आव”

कुस ताम वायान! लुल छि दपान नय छि वज्जानय,  
गुपाल त्रे यिम बेद्य छि दपान,  
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर आतशखान मजाजस छु दिवान डोल  
मंज नार ब्रहेन तूर संगुर  
तोति दजान नय—नय छि बहानय

नय नगम् शोरनिमन छु ब्रमान, जुव छु जुवान कल  
युथ नगम् प्रावुन मायफतुक  
श्रह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।

साहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् । ३ ॥ ३ ॥ गुणमयी मम माया दुरत्यया ।



تیتھ گیان حاصل پید، تھو کہ زانی اندر من علم  
 سوہ زان ناوتھ اوم تہ کنے  
 حق چھ پران نے ---- نے چھ بہانے ۲۱ البتہ

زن سوہ ولس زونگ چھ نگان، لام کن لام  
 من وینہ نگان تاوہتین  
 شولہ نران نے ---- نے چھ بہانے

ون سوہ گرتھتھ روہ ہٹاہ، تروہ بہتھ لوب  
 تھو پانہ تھلان والہ توے  
 آسہ گران نے ---- نے چھ بہانے

فاضل! شریک ساز کنے، سوہ مگر بہیون  
 گو پالہ! یوہے لولہ ہتین  
 منز چھ نران نے ---- نے چھ بہانے

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

त्युथ ज्ञान हासिल सपदि बवख जून्त्य अन्दर मन  
सुय ज्ञान हाविथ ओइम तु कुनुय  
'ह' छे परान नय—नय छे बहानय ।

जन् सोजवनस जोंग छु लगान लाम लूकन लाम  
मन वुहनि लगान ताव हत्यन  
बोलु छटान नय—नय छि बहानय ।

बन सूर गेछित रोजि हंटा चूरि बिहिय लेब  
सैथ्य पानु थलान वालि तबय  
भासि मरान नय—नय छि बहानय ।

'फाजिल' शरीरक साज कुनुय सोज मगर व्योनि  
गोपालु योहय लोलु हत्यन  
मंज छे सज्जान नय—नय छे बहानय ।

नोट— ग्यान—ज्ञानकारी, अकल  
ह—ईश्वर, अल्लाह ।

अतो जिबसुखेयी ज्ञानी च भरतपम ॥ १६ ॥

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।





वं तं निधममाद्याय प्रकृत्या निधत्ताः स्वया ॥



## पेज अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याजि प्रच्छयम  
मैं लय गोय गांव मातायि सूत्य हरदम ।

दोपुथ दुद मा सां चोथम चूरि चूरे  
हतय पेज बोजतय मलरे तु टूरे ।

दुदुवय नटच चथ ति रुजुम कल म्य अथ कुन  
योहय गव ठानु वोथ भगवानु सुन्द द्युन ।

या यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धया चितुमिच्छति । तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥

प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।

कामस्तस्ते हतज्ञानाः ।

सुदुर्लभः । १९ ।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

نیر گو سر پہ چھا پوشیدہ روزان  
کرشن پوز و نہ چھا نہ نہ کانسہ کھوڑان

بہج پندرچ نہ روزان و انسہ پابند  
لوکٹ بالک انی کو برت عقمند



یہ دھرتی گاؤ ماما پیٹھ چھ توشان  
دوان دود تھنی کرشن آخر بناوان  
کھوان تھنی امریت کوٹو واسیہ چاوان  
امس جنگ ایشور پدوی چھ دیاوان

سلس وہ ذوق یقیں سے کرتے جسے دیوتا مان کرے دیوتا مان کرے



पजर गव सिरियि छा पूशोद् रोजान  
कृष्ण पौज वननु छा जांह कौसि खोचान ?

नहेज पजरुच न रोजान वीसि पावंद  
लुकुट बालुक पमी कोरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,  
दिवान दुद, थन्य, कृष्ण माखुर बनावान ।

ह्यवान थन्य अमृतक्य नटच दाम् चावान  
अमिस जग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

लभते च ततः कामान्भयैव विहितानि तान् ॥ अन्तवचु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

स तथा श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥



کَرِشَن اَکھ بالکا پَنڑک مُجسَم  
فخر ز گتس یوہے اوتار۔ آدم  
کَرِشَن بترائ پیٹھ صلیح علامتہ  
یوہے اَکھ پوشونی امینج کَرِامتہ



کمرشن گویس چھ مورلی منزسہ الہام  
یمیک اکھ اکھ صد لوکن چھ پانام

کُرسن گو ظلمہ الیوان سوہ گلرے  
یُمیک دولاہ اپنرس تالہ تکرے

گِرشَن گو مقصدک نہر دیک نمنزل  
اُمس نش سارے حاصل کئے دل



کُرشن گو دُون سَمَتِ گَرْشَنک سَمَنَدَر  
 اَوْتَمَح وَاَتَمَح بَنان پُر تَح قَطَرِا گَر  
 کُرشن گو یَکِ دِلِ بُنَد اکھ سُه اَکَر  
 وَزَن سَیَح نَش چُھ بَدِھ مَوْتِاَل تے سَر  
 کُرشن گِیتا یَہ بُنَد گَہ تے مَنجِا ش  
 گُلن تارِ پَکین مَنزِ سَریہ پُر اَکاش  
 کُرشن گو اکھ پو سَر رُوپ پُر سِیمک  
 تَصَوُّر دِل پَسَند سو نَد شَرِپِک  
 کُرشن گو زَلزلہ کُرو دَس تہ کَاس  
 سُه خَالِص سو ن کُرا ن کَم بایہ تَر اَس  
 کُرشن ہر دِج چُھ پَنز اَپنہ دَہری  
 اَنکاس بَنان اَنکاس اِنکاس اری



साधियुगाधिदेवं मां साधियुगं च ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्हृत्केवलाः ॥ ३० ॥

कृष्ण गव दुन समुत गछुनुक समन्दर  
आतथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर  
बुजान यथ निश छु मदमोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आवा  
गटन तारीकियन मंजु सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक  
तस्सव्वुर दिलरुवा सोंदर शरीरक ।

कृष्ण गव जलजला क्रुधस तु कामस  
सु खालिस सुन करान कम मायि वामस ।

कृष्ण हवमिच छु पज्ज आईनु दोरी  
अहंकारस बनावान इन्कसारी ।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।

ते द्रव्यमोहनिष्ठका भजन्ते मां ददव्रताः ॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।

کرشن گو تھن، دودج مانے، شہل سر پہ  
 موہن، لوہس کنی بر پہ، ز الو فی رہہ

کرشن گو پوشون گنگاپہ ہند جل  
 چھلان ہندس، مسلمانس دیک مل

کرشن گو فکر تارن والنم ہند ویر  
 سہ چھا اکوند، سہ گو پرتھ کانسم ہند ویر

کرشن گو استما ست استما بس  
 تمس سولے چھ حاصل ہے یہ گو بس

۱۔ مانے = محبت ۲۔ بر پہ = شولہ (شعلہ) ۳۔ موہ = بھوئے بیوئے

بھ۔ طمع۔ ۵۔ ویر۔ جاداد ۶۔ ست۔ دایمی پندر ۷۔ دے = مہرمان

شری بھگوان کا ارشاد دسواں ادھائے

سرخ بھگوان پھر یوں ہوئے۔ کہ سن آئے قوی دست پیالے کرے۔

कृष्ण गव थन्य दुदुच मालय शहल सेह  
मुहस लबस कुनो ब्रह्म जालवुन्य रेह ।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल  
छलान हैदिस मुसलमानस बिलुक मल ।

कृष्ण गव फिकिरि तारुन बांसिहंद व्युच  
सु छा अक्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हंद व्युच ।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस  
तमिस सोरुय छु हांसिल देययि गव यस ।

महासागर कृष्ण यिम दिल बनावान  
तिमय तस मंज गवनुक्य दुरदानु छारान ॥  
तलाशिय मर नु ज्ञानुक्य जीठ्य मेंजिला  
शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।  
तिमय तस मंज गवनुक्य दुरदानु छारान ॥  
तलाशिय मर नु ज्ञानुक्य जीठ्य मेंजिला  
शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।





نئے ہو کر

نور علی

لاہور

ہے! نے چھ گڑھان، شولہ ومان، نارہسے نار  
 رہتہ تینو مہن کرشنہ تہ کن  
 لارہسے لارہ

لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جارہسے جارہ

دل پانہ برہمان - کیاہ چھ دئی - کتھ چھ ومان بیر  
 یم چانہ نہج پکو تہ سپدو  
 یارہسے یارہ

نور علی لاہور  
 لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جارہسے جارہ

نور علی لاہور  
 لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جارہسے جارہ

نور علی لاہور  
 لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جارہسے جارہ

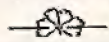


گوپالہ ! یترھا کہ آر پلس آب کر کہ آب  
 اکھ تہ تہ دوس ہو کر لگان  
 دار ہنسہ دار

۱  
 ۲  
 تم چانہ کلے چھو تہ چٹیکھ ویتھ تہ سپدی ویتھ  
 ۱ دریا  
 تم قلر من شری تار موٹا کہ  
 تار ہنسہ تار

دھن تار لولہ : کینہہ مگر من چھ گنجک نیاس  
 نیس تار تہ پتھ ، تس نہ کیچ  
 تار ہنسہ تار

۲  
 تار تھ تہ زیوانم ، کرشنہ لوانم من مہ سرفراز  
 ۲  
 اتھ پریکھ پیچے پیچہ مہ گندم  
 تار ہنسہ تار



Handwritten text in the margins, likely commentary or additional verses, written in a smaller script. The text is arranged in vertical columns along the left and right edges of the page.





لچھ والنسہ گترھتھ کرشننہ ترما یکھ تہ مرماکھ دل  
 اتھ زرنیمہ پھر س تریمہ چھ لگان  
 پیارہ نسہ پیار

گملاؤ ہنہ وٹھ تہ گے پھر تہ مہ کن نین ! نین اچھ  
 یو دتیر نظر دکھ تہ دپے  
 مارہ نسہ مار

کرشنا ! مہ دیتھم سوزنتے نے مہ دلس زدی  
 چھس دومہ ہن پٹھ پٹھ ونگ ٹوٹھ  
 دارہ نسہ دارہ

دارہ دودار

مورہ کی چھ ند - ہاتھی نے - شہ چھ امیک زرو  
 رُح بالہ کرشن فاضلنیم  
 شادہ نسہ شادہ

۱۔ وہ کہتے ہیں بلبل مرے ذوق سے، وہ کہتے ہیں یو جیسا مری شوق سے

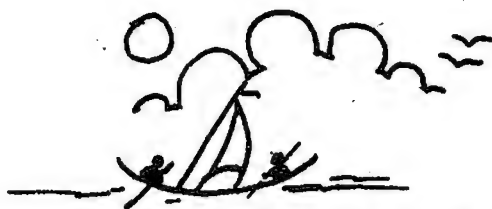
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
अर्चन

लक्ष बांस गच्छिथ कृष्ण च मा यिख त् मुहकमन  
अथ जन्म फिरिस च्युह छु लगान  
प्यार हसा प्यार ।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मैकुन नैन  
योद तीरि नजर दिख त् दपय  
मार हसा मार ।

कृष्णा मे द्यु तथम सोज नतय नय म्य दिलस जे द्य  
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक  
होख दार हसा दार ।

मोरली छु निदा, हातफुन्य लय, शह छु अम्युक जुव  
रुह बाल कृष्ण, फाजिलन्य यिम  
शार हसा शार ।



तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

तमः  
तेषामेवानुक्रम्यार्थमहमज्ञानं  
॥१०॥  
ददामि बुद्धियोगं तं येन मायुपयान्ति ते ॥



## مورلی تہ مورلی درد

گرتشہ مورلی پیکر سوز و گداز  
دلربا، دلکش، مودرتے دِلنواز  
کے اچھ عرفاں تہ شہ قدسی صفا  
پانہ مورلی درد چھ سرتا پا مجاز

## میشرونے

میشرونے پزانہ سمیچ بانسری زان  
بہانہ! گوشہ و چھن نے کس چھ وایان  
شریک سوز لافانی شہس تا  
شہک سا لک گرتشہ آوار انسان

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्त्य तं पुरुषोत्तमम् ।  
 न हि हे समावप्यन्ति विद्वद्भिरात्मनः ॥

## मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोजो गुदाज,  
 दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज ।  
 लय अमिच इरफान तु शह कुदसी सिफात  
 पान् मोरलीदर छु सर ता पा मजाज ॥

नोट :-

- १ पैकर—कालव, जिसम = मुज्जसम
- २ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन बोल
- ३ मोरलीदर—मरली बोल, कृष्ण जी ।

## मैचिव नय

मैचिव नय प्रानि वक्तुच बाँसुरी जान  
 बहानय, गोछ बुछुन, नय कुस छु वायान  
 शरीरुक सोज लाफानी शहस ताम  
 शुहुक मालिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोट:-

- १ नय—मोरली

केशव । यन्मां वदसि सर्वमेतद्वत् ।  
 अस्तितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिनारदस्तथा ।

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्त्य तं पुरुषोत्तमम् ।  
 न हि हे समावप्यन्ति विद्वद्भिरात्मनः ॥१५॥





کرشن بالسی ہتھ بڑتھ سیجر زن اتھ  
 یہ مُستی تہ فرہتھ چھ زن بوزونی چیتھ  
 یہ سنگیت چیتھ اے کرشنا  
 یہ مودلی مودر مائے کرشنا  
 تہ زگنس یہ نئے وائے  
 کرشنا کرشنا

کرشن بالسی ہتھ بڑتھ سیجر زن اتھ  
 یہ مُستی تہ فرہتھ چھ زن بوزونی چیتھ  
 یہ سنگیت چیتھ اے کرشنا  
 یہ مودلی مودر مائے کرشنا  
 تہ زگنس یہ نئے وائے  
 کرشنا کرشنا



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ शोकं सान् रूस रूस अगर कृष्ण गरख  
 मरख च मरन बोहे-तवय नसो च ज्ञाह मरख  
 छिजनम् फिय लगान तिमन यशिद गहान यियन  
 तरख च बसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बरिथ सेहर ज़न अथ  
 यि मस्ती तु फरहथ छि ज़न बोजवुन्य चथ  
 यि संगीत चथ आय कृष्णा !  
 यि मोरली मोदर माय कृष्णा !  
 च जगतस यि नय वाय , कृष्णा कृष्णा !

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बरिथ सेहर ज़न अथ  
 यि मस्ती तु फरहथ छि ज़न बोजवुन्य चथ  
 यि संगीत चथ आय कृष्णा !  
 यि मोरली मोदर माय कृष्णा !  
 च जगतस यि नय वाय , कृष्णा कृष्णा !

च जगतस यि नय वाय , कृष्णा कृष्णा !

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

कथं विद्यामहं योगिस्त्वं सदा परिचिन्तयन् ।  
 योमिंमृतिमिलोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।  
 भयः कथय तस्मिन् भृष्यतो नास्ति मेऽभ्युत्तम ॥

یہ لے زن منس نادر دزان زن نرندن دار  
کران رُح چھ بیدار یہ یس لوگ سہ مشیار  
شمس کینہ نہ پھر وائے کرشنا!  
یہ مہورلی کرشمہ کر لے کرشنا!  
منس کینہ نہ پھر وائے  
کرشنا کرشنا

یہ لے بوزنگ ہمس دوان الیشور یس  
سہ یوگس اندر مس کران ششہاس  
شمس نش پڈر وائے کرشنا!  
یہ مہورلی چھ بڈشائے کرشنا!  
ہمسچ وٹھ چھ سیکر تر لے  
کرشنا کرشنا



मरीचिर्मरुतामसि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

। अहमादिश्च सर्वभूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार  
करान दिल छु बेदार यि यस लोग सु हुशियार

तमिस कहै नु परवाय कृष्णा !  
यि मोरली प्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कहै नु परवाय, कृष्णा कृष्णा !

अहमादिश्च सर्वभूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस  
तमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छै <sup>बड</sup> शाय कृष्णा !  
ह्यसच वथ छै <sup>स्य</sup> ज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूतेशयस्थितः ।

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥



یہ لے پھر گوشن تہ لُج لام پوشن  
 چھ بلبُل تہ گوشن حقیقت چھ گوشن  
 یہ مہر لی چھ بے رُکشا کرشنا  
 یہ مہر لی چھ بکتاے کرشنا  
 یہ بے رنگ بے رُکھاے  
 کرشنا کرشنا

دھرم، کُربے تہ انسان سبٹھاؤ تہ سبٹھاہ جان  
 یہ ساری چھ مانان چھ منزل سہ بھگوان  
 چھ گپتا تہ ہمارے کرشنا  
 یہ مہر لی اثر بے پوزاے کرشنا  
 ستمے سور ہمارے  
 کرشنا کرشنا

यि लय कीर गोशन तु लज लाम पोशन  
छि बुलबुल ति तीशन हकीकत छे रोशन  
यि मोरली छे बे छाय कृष्णा !  
यि मोरलो छे यकताय कृष्णा !  
यि बे रंग बे छाय कृष्णा !

नोट : १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन  
करन बाजन ३ बेरंग—बे इमतियाज



धर्म, कय त इन्सान स्यठा रूत्य, स्यठा जान  
यि सोरी छि मानान छु मंजिल सु भगवान  
छे गीता ति हमराय कृष्णा !  
यि मोरलीं बे पोज आय कृष्णा !  
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा !

نئے لے چھ یکسان کئی ہندو مسلمان  
 چھ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان  
 دُئی ہنر نہ کہنہ رے کرشنا!  
 یہ موہ لی چھ بے نیاے کرشنا!  
 چھ یکسان بے نیاے  
 کرشنا کرشنا

حفاظت پشن ہنر چھ وٹھ مُرسلن ہنر  
 گے موسمن ہنر گے عیسمن ہنر  
 گپا لاثر یہ تھنر بے کرشنا!  
 یہ موہ لی دلچ جائے کرشنا!  
 تریہ نشیم سمتھ آئے  
 کرشنا کرشنا



॥ : नृपि कृष्णः । नृपि कृष्णः । नृपि कृष्णः ॥

नये लय छे यकसान कुनो हेन्च मुसलमान  
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान ।  
दुई हंजु नु कांह राय कृष्णा !  
यि मुरलो छे बे न्याय कृष्णा !  
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा !

नोट:- १ दुई - बैर २ बेन्याय - न्याय रोम



हिफा जत पशन हंजु छे वय मोरसलन हंजु  
गहे मूसहन हंजु गहे ईसहन हंजु  
गुपाला जे थज जाय कृष्णा !  
जे निश समिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा !

नोट :- पुश - हयवान, २ मारसल - दरजम मंज  
प'गमवरस खसिथ

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्येकमक्षरम् ।

देवर्षीणां च नारदः ।  
अश्वत्थः सर्वदृक्षाणां  
हिमालयः ॥  
यज्ञानां जपयज्ञोऽसि  
स्थारणां

उन्वैः श्रवसमक्षानां विद्धि मामसुतोद्भवम् ।  
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

ترچھا تھن ترچھا تھن ترچھا ماچھ پو تھن  
 یہ تھن سو رگہ کو ازی نقش اتھ چھ بنی بنی  
 چھ کیو پڈ تہ سرے کرشنا  
 یہ مہرلی چھ سرے کرشنا  
 حین تر دہرے  
 کرشنا کرشنا

کرشن جی اثرہ چھ جے کئے شہ، کئے پے  
 کئی نے، کئی نے بیتھی وہ پترہ دے  
 پے گون ترہ نش درے کرشنا  
 یہ مہرلی اثرہ نش زے کرشنا  
 ترہ جے جے اثرہ لوگ آے  
 کرشنا کرشنا







گلن ہند ترنم، شہرین ہند تکلم  
 چھ موہلی موہر میوٹھ گفٹار گفٹار  
 وزن شبنم، جلتہ نگ تار کن ہند  
 یہ موہلی سراپا چھ سینا سینا  
 دلچ پوشوئی لے میچ زندہ سوانہ  
 پین منتر چھ پوشیدہ اسرار اسرار

میں رسول میں مولیٰ واسد اسے شیر قبیلے میں پاندو کے ارچن امیر

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



गुलन हुंद तरंनुम थरघन हुंद तक्कलुम,  
छे मुरली मुदुर म्यूठ गुफतार गुफतार।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,  
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्दु आवाज  
यिमन मंजु छि पूशीदु असरार असरार।

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याजि चि अंदेश करिथ चोय,  
भगवान्। यहुद बागि बेहत शेहजार लुकन वोत।  
जुव मंगतु, जिगर मंगतु, चू रुह मंगतु दिलो जान,  
मोसुम्। लगय क्याजि असो जूरि मक्खन रुपोय॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
कविः ॥ कवीनामुशना  
शुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना

शुनीनां वासुदेवोऽसि पाण्डवानां धनंजयः ।



بالہ کِشنِ یاکِ دِرخم آگہی  
 پادِ گوہر دس مہ ذوقِ بندگی  
 بانسری ہُند شہ چھ پیریمک اتما  
 بانسری ہنرے چھ سازِ دِبری  
 بوزوئی دُوپ نے خودی ہُند روپ بنگ  
 اٹھ خودی پیٹھ چھ فدا لچھ بے خودی  
 وچھ امی موملی حقیقتِ واش کوڈ  
 کوڈ امی ظاہر زہ آوارہ گوئی  
 نیکلی منز کرد و بیان سو رخ و سفید  
 فاضلا! مومری پن رنک قودری



॥१४॥ नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।

## बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिचनम आगंही

पाद' गव हृदयस' म्य जौके' बंदगी ।

बाँसुरी हुंद शह छु प्रभुक आत्मा

बाँसुरी हुंज लय छै साजे दिलबरो ।

बोजुबुन्य दो'प नय "खोदी" हुंद रूप रंग

अथ खोदी प्यठ छय फिदा लछ "बेखोदी"

बुछ अमी मोरली हकीकच वाश कोड

कोर अमी जाहिर जि अवतार गव नबी,

यकदिली' मंज कर व्यपान सुरखो सफेद

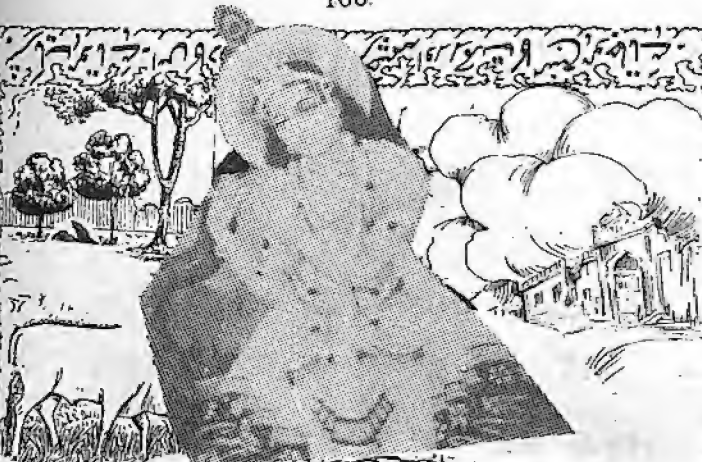
"फाजिला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, ह्यस 2. दिलस, 3. शोक

4. विशर

वा । श्रीमद्विजितमेव यद्यदिभूतिमत्सत्त्वं ॥४०॥ एष तुद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।



بے خبر یا بھٹی کر شبنہ لالہ گورنس  
 مرتب منتر ہیر ہیر ہیر ہیر کھورنس  
 اتھ اندر میانین اتھ منتر اوس کیاہ  
 واو مالین منتر بہ سودر تورتس م ساگر

شعورس لا شعورس منتر کرشن آم  
 وچھم زن سیرہ، لیکن رنگ سیا فام  
 سہ یا متھ درشنک بر و تھو چھ تراوان  
 وچھان تس گوپین سیتو الیثور تام

کیا بی کو جب عرفان باہری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لئے ہر طرف ایسی ہی پرمانہ کا

एवमेवधारय त्वमात्मानं परमेश्वर ।

॥ १॥

नमः कर्मवृत्तं माहात्म्यमात्रं चान्यथा ॥ २॥



वेखबर पा'ठ्य कृष्ण लालन गोरनस,  
मरतवस मंज हेरि ह्यो'र 'हयो'र खोरनस ।  
अथ अन्दर म्यान्थन अथन मंज घोस क्याह,  
वावु हात्यन मंज ब' सो'दरस तोरनस ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

शऊरस लाशऊरस मंज कृष्ण ग्राम,  
वृछुम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह काम ।  
सु यामथ दर्शनकय वर वंध्य छु त्रावान,  
वृछान तस गुपियन सत्य ईश्वर ताम ।

अर्जुन उवाच ॥

मदनप्रहाय परमं गुणमध्यात्मसंज्ञितम् ॥

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १॥





سن ہے نے کیا

دلن گو دین و دھرمک سہرو کم  
چھ اوگون پھانپھلاوان ابن آدم  
پہیکھ اوتار سنت یوگ پھیر واپس  
اے کنی پیارنچ کل آشر ہتر چھم

۱۔ اوگون = بدصفت ۲۔ ابن آدم = انسان ۳۔ اوتار یون = پتہ زون

॥६४॥ : ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥

صبح و تہ رُخ ! اگرشن چھے سیتو پانس  
 سه میلته سینر ریکس ذرئس ذراتس  
 جہانس سورستہ یام تار کیج  
 نجاتچ رز کر تہ لاگس کینارس

सही वथ रठ ! कृष्ण छुय सूत्य पानस  
 सुमीलित पजर्रकिस जरस जुरातस ।  
 जहांनस सोरि सथ याम तार लवनुच,  
 नजातचि रज करिथ लायस किनारस ।

संजय उवाच

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरु कम,  
 छु अवगोन फांफुलावान इल्लि आदम ।  
 च्छु ह्यख अवतार सतयोग फेरि वापस,  
 अवय किन्य प्रारुनुच कल आशिहच्छम ॥

अवगोण—वदसिफत, :— काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार  
 याने शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरुर

धार्तराष्ट्राणां हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥ रथोपस्थ उपाविशत् ।

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः



یا تمھ پہ آدم دین و دھرمک پیرا یہ سمسار  
 گیتا چھ شاید کر شتر گوپال سپد نمودار  
 تس سپد بے دین ادھر من تے بچھن ستر جنگ  
 میٹر خاک سپدن چھیکر س ظالم تہ خطا کار



गान्धीय संसारे इति वाच्यं पारितोषिकं

# गीता

کرشن جی ار جنس اسرار باوان  
 تهن ہند اینہ گیتا گاشراوان  
 سلوک نابد تہ الہامی شبد قد  
 پر ن والیس چھ امریت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्जनस असरार बावान,  
 तिमन हंदु आनु गीता गाशरावान ।  
 श्लोक नाबद त् इलहामी शब्द कंद,  
 परनवालिस छि अमृत दाम् चावान ॥



यामत यि आदम धर्मबुद्धीनुक प्राटि यि संसार,  
 गीता छि शाहिद, कृष्ण गुपाल सपदि नमूदार,  
 तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,  
 मेच खाक सपदन छेकरस बेदीन त् सताकार ।

॥२९॥ मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥  
 वेपथुश्च शरीरे । वेपथुश्च शरीरे ।  
 सप्त गात्राणि मुखं च परिचुष्यति ।  
 सीदन्ति सप्त गात्राणि मुखं च परिचुष्यति ।

दृष्टेर्मं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

न च शक्रोभ्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥



یام دھرتی پیٹھ سید سندی باندہ عام  
 نہ کہ سندی پاٹھو نثر نہ پا کور و تمسام  
 سنت نمودار گو است کو فود گو  
 کور سری کرشنن صبحی سمیک نظام

ہماری ادھر فریج ہے بے شمار، کہاں دار جہیستم شایع عالمی وقار



याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु ग्राम,  
 चक्रि हिद्वा पाठय नचनि लग्य कोरव तभाम।  
 सत नमूदार गव असथ काफूर गव,  
 कोर श्रीकृष्णन संहो समयुक निजाम ॥





چھ بھگون ناسہ تر اسن بیخ گالان - دغا بازن چھ موتک پیالہ چاوان  
 گٹن منن بیچا لو ان جیون اڈھ من  
 سہ دین دار: حق پرستن تار تاران

ह्युभगवान नासुत्रासन बेख जलान ।  
 दगाबाजन ह्यु मोतुक प्यालु चावान ॥  
 घटन मन्त्र फाटवान जीवन अध्रमन ।  
 सुदीन्दार: हक परस्तन तारु तारान ॥



شتمگار و ستم کور پاؤی پانس  
 مہا بھارت پھرن رو دیر تھ نہ اس  
 تلو نیز لایع علم یزد روز قاسم  
 سبق دیت کر شہ او تارن جہاں

सितम गारव सितम कौर पांन्य पनस ।  
 महाभारत फिरन रूद प्रथ जमानस ॥  
 तुलिव पजरुच्य अलम, पोज रोजि कोइम  
 सबख द्युत कृष्ण अवतारन जहानस ॥

راجہ دیو دھن کا قصہ

# کرشن کہانی

اگر سین اور دیوگ دو بھائی تھے۔ اگر سین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی  
ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناٹے دیوکی کو بے حد پیار  
کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شوری سین کے بیٹے  
واسد دیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی  
ہوئی۔ اُس نے دیوکی کو چہنیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ  
بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس  
بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھوں بیٹا تنہا قاتل ہو گا۔ جب  
کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک بھڑ  
یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن  
میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے  
پہلے ہی اُس کی ماں دیوکی کو موت کے آٹاروں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں  
جائے۔ وقت آنے پر کنس دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار

دھرت راستہ لے کر آیا۔ دھرت راستہ لے کر آیا۔



## ❀ कृष्ण कहानी ❀

लेखक

**मानस-किंकर कौशलकिशोर दास**

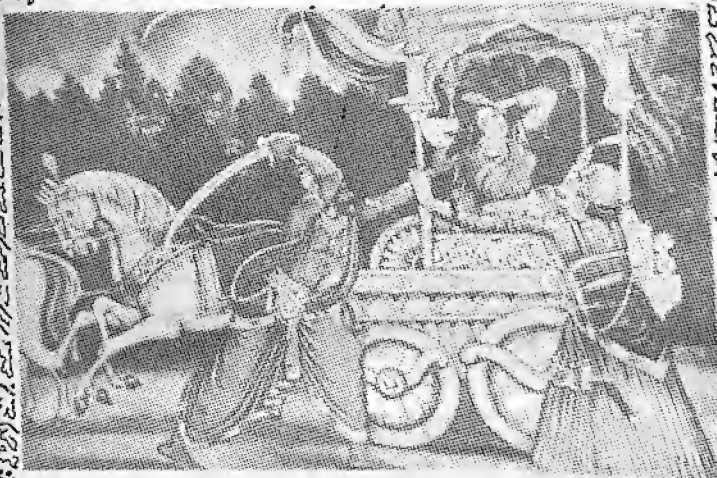
उप्रसेन और देवक दो माईं थे। उप्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा। ऐसा सोच कर

{ धृतराष्ट्र उवाच }

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

सजय उवाच

॥१॥ संजय ॥ किमुदितं पाण्डवाश्च मामकाः ॥१॥



کرشن مہاراج کی ماتا جی کو  
بھائی کش قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مر جائے۔ وقت آنے پر کش نے  
دلوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میاں سے نکالی۔  
جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کش نے اس کا ماتھ پکڑا اور پر اٹھنا  
کی کہ دلوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور  
شادی شدہ ہے۔ اس لئے آپ اس کو نہ ماریں۔ اس کے جو بیٹے  
ہوں گے ہم انہیں آپ کے حوالے کریں گے۔



कंस बड़ा पापी था । उसकी

दुष्टताकी सीमा नहीं थी । वह भोजवंशका कलङ्क ही था । आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया ।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।

वीर्यवान् ।

काशिराजश्च

विराटश्च दुपदश्च महारथः ॥४॥

युधानो विराटश्च दुपदश्च महारथः ॥४॥

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।  
सौमित्रो द्रौपदियाश्च सर्व एव महारथाः ॥५॥



کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے مندرجی کے گھر کو کل پنہا کے لئے کہا۔ وہاں  
 اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جیسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسد یو کے ہاتھوں  
 سے پھلکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پر دروازوں  
 پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسد یو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



لڑائی کو نکلے میں اہل خدنگ جو رجب المرجب میں وقت خناب۔

को नींद आ गई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहाँ पहुँचा दो और वहाँ उनके यहाँ कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहाँ ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियाँ खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन- फँसकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया



واسد یو جی نے کرشن جی ہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط  
 کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پہنچ گیا۔  
 اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی  
 پانی چڑھ گیا تھا اور ذریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے  
 عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان  
 کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ  
 لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا  
 کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقع فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر  
 چوم لئے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسد یو جی کو پار جانے دیا۔  
 واسد یو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس  
 وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسد یو جی نے کافی  
 رازداری کے ساتھ کرشن جی کو مانا جسودا جی کے پاس لے دیا اور  
 کنیا کو اٹھا لیا اور متھر اسم کر دیو کی جی کو دے دی جیل خانے میں پہلے  
 ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سن کر تمام ابہرے دار جاگ اٹھے۔ خبر  
 پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

مہاراج گرو صاحب احترام، جہاں کے دو جہنموں میں عالی مقام۔



अथ श्रीकृष्णस्य गोपनीयस्य च ॥



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूय से अपना  
पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श  
कर प्रसन्न हो गई और उन्हें भाग्य दे दिया। वसुदेव  
जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे  
थे। भवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के  
पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा  
लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार  
में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन  
सुनकर सब पहरेदार जाग गये। सबर पाते ही कंस  
वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्त्रवीमि ते ॥ ७ ॥ भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिजयः ।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम

مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وچار  
 آتے ہی جو نہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ہاتھوں میں سے  
 نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیسے مارتا  
 تجھے مارنے والا تو گوگل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر  
 منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے باپ کا ہاتھ کا  
 کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے  
 بہت سے راکششوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوگل بھیجا، لیکن وہ خود  
 موت کا شکار ہو گئے جو بھی جاتا تھا اس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس  
 نے پوتنا کو بلایا۔ اس نے کہا کہ گوگل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں ان سب کو  
 کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں  
 زہر بھر کر گوگل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر تند بھون میں آگئی  
 اور ایک بہت سُندر گوپی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی  
 مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا جسودا جا  
 گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو  
 بھگو ان کے مُنہ میں ڈالا۔ تب پر بھونے دودھ کے ساتھ اس کے

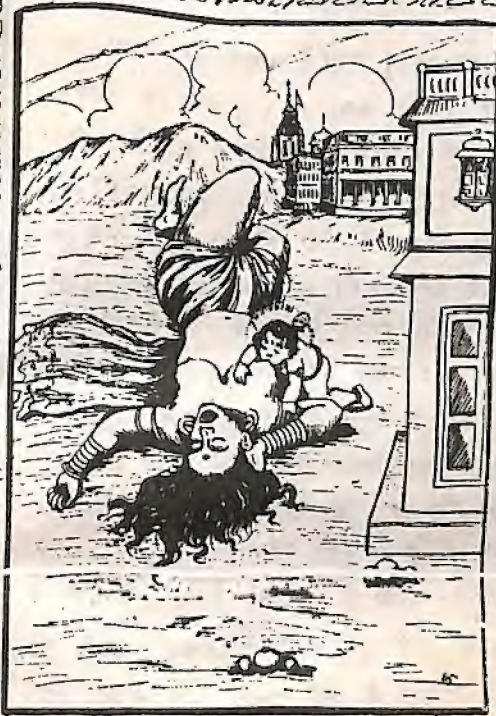
॥१४४॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली घरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है । कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं । तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का आस बन गए । जा भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया । उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊँगी । इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ । पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई । वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बघाई लेकर आई हूँ तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया । यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुँह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

यथाभागमवस्थितः ॥ संनृ ॥ अनेपु ॥ १०॥ पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥





پرانوں کو بھی پی لیا  
اس طرح شکستہ  
بکاسر اور نرکاسر  
وغیرہ بے شمار  
راکشوں کا  
خاتمہ کر دیا۔  
بھگوان کرشن  
پیلہ ہی کنس  
کو بھی مار سکتے  
تھے، لیکن ان

راکشوں کو بھی

مارنا تھا، اس لیے کہ کنس انہیں ویاں بھیجتا تھا اور پر جھو جی انہیں آسانی  
اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلیا میں بھی سیاست کار فرما تھی،  
کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن غارتیہ بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے  
جنگ کی سولہ

मगवतः पण्डितश्च विष्णुः शक्तिः ॥



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि  
अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान् कंस को भी  
पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी  
मारना था अतः कंस उन्हें वही भेजता और प्रभु खेल २  
में उन्हें मार देते थे। भगवान् की माखन लीला में राज-  
नीति थी क्योंकि बज्र से सब माखन भ्रूण रूप में कंस  
को भेजा जाता था। भगवान् ने

स्थितो स्यन्दने महति श्वेतैर्युक्ते तवः शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گوہر کا  
 اُن پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی اُن کے گھر نہیں جاتے تھے وہ  
 رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک  
 کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی توڑ  
 دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو  
 ٹیڑھا کر دیا۔ پیل آرجن کا ادھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارو جی نے اس کو کہا کہ آپ بھگوان کرشن  
 اور اُن کے بیڑے بھائی کو دھنشن یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے  
 پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا  
 اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سامے گوکل کو جمن میں بہائیے  
 اکرور جی نے سب ماجہ رنند جی کو سنا یا۔ ماما جسودا نے کرشن سے کہا کہ  
 آج درور کھیلے مت جانا، لیکن پر بھونے سب دوستوں کو ساتھ لیکر  
 جمن کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی  
 تو انہوں نے اسے جمن میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔  
 وہاں کالیاناگ کو قابو میں لا کر اُس کے چھن پر ناچنے لگے اور اسی پر







تین کروڑ کنول کے پھول

منگالے۔ اگر ورجی جب

بلرام اور کرشن کو لے جانے

گئے تو تمام برج اُن کی جدائی

میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان

نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی

لوٹ سہیں گے۔

متھرا پہنچ کر گویا پڑنا می ماضی کو نجات دلائی۔ کشتی کھیلنے کے دور  
 بے شمار پہلوانوں کو پھپھڑا۔ اپنی ماتا دیوی کی جگہ کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو  
 بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مُمکنی بخشی۔ واسدپو اور  
 دیو کی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اگر سین کو قید سے نکال کر  
 تخت شاہی پر بٹھایا۔ جبرائیل اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے  
 سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب  
 اٹھ سو تیس بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دُور کا چلے گئے اور رات بھر  
 تمام لوگوں کو دُور کا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر



नमश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥ अथ व्यवसितान्दष्टा धातराष्ट्रान्कपिष्वजः ।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।



کو دپٹے۔ جبرائیل نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں  
ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوا دی۔ پھر خوش دلی سے لڑو قات  
کرنے لگے۔

ادھر جھوماسر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے انہیں  
حرست میں رکھا ہوا تھا۔ انہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان  
نے جھوماسر کو قتل کر کے مملکتی دلائی۔ پھر ان کے پہاڑ تھنا کرنے پر پتی روپ  
میں تسلیم کیا۔

کورؤ پاندوؤں کی سپہ میں دشمنی تھی۔ پاندو بھگوان کرشن کے  
معتقد تھے۔ کورؤوں نے جمے کی چال چل کر پاندوؤں کو ہرا دیا اور  
سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھڑی سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔  
لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دشمن کھینچتے کھینچتے  
مار گیا۔ ان کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی  
زہر دیا۔ لیکن ہر بھوسب طرح سے ان کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت  
کے جنگ میں ارہن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارہن کو موہ سیا  
تو اسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جبرائیل کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

एवमुक्त्वा ह्याकेशो गुडाकेशेन भारत ।  
 सेनारुमयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२१॥  
 यावदेताभिरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।

ऊँचे से बचे नहीं होंगे और फिर पहाड़ी के चारों  
 ओर आग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा ।  
 उधर भीमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं  
 का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने  
 भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भीमासुर का  
 वध करके उन्हें मुक्त किया । फिर उनके प्रार्थना करने  
 पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया । कौरव  
 और पांडवों की आपस में शत्रुता थी । पांडव भगवान  
 कृष्ण के भक्त थे । कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर  
 इनको हरा दिया । तथा सब कुछ दाँव पर लगवा  
 दिया । मरी समा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा  
 लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बड़ाया कि स्वयं  
 दुःशासन खींचते-२ हार गया । वन में भेज दिया,  
 कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया । किन्तु प्रभु  
 सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे । महामारत के  
 युद्ध में अर्जुन के सारथी बने । युद्ध में जब अर्जुन का  
 मोह हो गया तब उसे गीता का उपदेश दिया । जरासन्ध  
 को भीम के द्वारा मरवा दिया । अन्त में

एतेऽत्र समागताः  
 योऽस्यमानानवेक्षेऽहं य  
 योऽस्यमानानवेक्षेऽहं य  
 ॥२२॥  
 योद्धुकामानवस्थितान्



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

सैन्योत्तरमयोरपि ।

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्निधुनवस्थितान् कृपया परयाविष्टा

पितामहान् पितृन् तत्रापश्यन्स्थितान्पार्थः ॥ २५ ॥ तत्रापश्यन्सर्वान्निधुनवस्थितान् कृपया परयाविष्टा

अन्त में विजय पांडवों की हुई क्यों वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे । हमेशा धर्म की विजय होती है । पांडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये । भगवान कृष्ण की सीला का वर्णन कहां तक किया जाए । यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन भी भागवत में है ।

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

فتح پانڈوؤں ہوئی کیونکہ وہ دھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔  
فتح ہمیشہ دھرم کی ہو کر رہتی ہے۔ پانڈوؤں کو راج دلا کر  
پر بھو دوار کا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ درون اور بھیشم ڈے تھے واماں جے تھے وہیں راجگان جہاں  
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سرکف  
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے۔ دانے۔ استاؤ ذی  
کہیں بیٹے پوتے کہیں یار ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں میں غمخوار ہیں  
۲۷۔ خسرے کوئی کوئی دلیند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔  
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

विषीदन्निदमब्रवीत् । भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।



# ہرے کرشنا !

کرشنہ یتو یتو یتو ایسی کلین پوشہ لہ کر !  
 بانسری شہ دودو تو  
 دودونن شالہ کر  
 باغ نشاط گل پھولن - گوپین دل تہ شل برن  
 کرشنہ ! داتہ از مرز  
 شبہ منس موختہ مار کر  
 چانہ گیشیا مہڑ پاہ نش صبح نگین تہ شہ پیو  
 سہ پیو کھس نہ کر تھ  
 حارتن کر دگار کر  
 باغ نپیمہ عطر زہڑ تھ - سہ پیو ہوا پیہ وار کر ان  
 پوشہ پدین تہ کتھ کری  
 توتہ ہمیس اما کر

پیاله وینیمیم بر لکن چانه دیایه کن نظر !  
 کرشته دیاله یودنه یکھ  
 سونتہ پلن ہمسار کر  
 نیچو نہ کر دلبری گلن یس نہ کر دلبری گھو !  
 درشنکو بہتر تر تمہن  
 پریمہ ہتی دل تیار کر  
 از تہ گنگاہ بہچو بہتر تر تمہن چانہ وہ میزد تار کر  
 کل مہر مس رس گلن  
 کیاہ یکے رم مہ تار کر  
 تار شکار سول بہ سول - ماننہ کیلس نہ گزند یون  
 وہ فی اگر لانکہ پیچہ تر کہ  
 میون دل شرمسار کر  
 چانہ خیالہ کنو ونم - ساسبہ بدی دل پسند سوخن  
 فاضلن تار تر غزل  
 از پنن اشتہار کر

## हरै कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर  
 बांसुरी बाह दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर  
 बागि निशांत गुल फौलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन  
 मेठि, दहान' कर सौखन, शबममस स्वस्त'हार कर  
 चानि ग्येशामि छाया तल. सुबहि निगीन ति शामि प्यव  
 सिरि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर  
 बागि नसीम' अंतरि छठ, आयि बेबायि वर करान  
 पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोति हस्यस अमार कर  
 प्यारवन्यन य'म्बर बलन, चानि पोत छाई कुन नजर  
 कृष्णा' दयाल 'यो'द न यिख, सोन्त' बलन व्यमार कर  
 यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव  
 दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस बागुजार कर  
 अज ति गंगायि ब'ध्य ब्रह्मन चानि' वो'भेजि तारि क्र'यं  
 कल मे' रुमस रुमस गनन, क्याह यिमय रुम मे' तार कर  
 तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न अंद यिवन  
 वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर  
 चानि खयाल किन्य वनिम, सासबच शार दिलपसन्द  
 फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर





کمرشہنہ اچھو لکھم رنگ تہ بے رنگ پان گوم  
 بے رنگی منز حیان پیریمک رنگ سنیوم  
 یہیمہ رنگ پیراوتھ گئے رنگ نظر آم  
 اتھو رنگس منز سریرہ پیراگاش دل سنیوم

Krishn Leela

کرشن لیلہ

कृष्ण लीला

ڈاکٹر نظام الدین - پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج، سرسنگر۔

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے بالک اوستھا اور کرشن لیلہ نامی  
کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سور داس رسکھان پریمانت،  
نروتم داس، رتنا کر، سبیر مہینیم بھارتی کی روایت کو قائم  
رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھاوا دینے میں ہم  
انہیں امیر خسرو، ظفر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیگل اتساہی



اور فیض بنارس وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے  
 سنگور و سری بابا گورو نانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم  
 کارنامہ انجام دیا ہے جس کی سراسر کھ قوم نے کی ہے۔  
 فاضل کشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیل کی  
 ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص  
 ماحول کے تخلیقی کام میں جُستے ہوئے ہیں۔ ان کے اشعار میں  
 بانسری کے میٹھے سُرخیلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی  
 اس سر کو سنتا ہے جے جے ہری پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک  
 ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اُس میں ہندو مسلمان  
 کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کمرش جی کو گنگا کا ایسا پاؤں چل  
 (یہ لوترا پانی) تصور کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے  
 میل کو دھو ڈالتا ہے۔ کمرش کو پوشہ و ن گنگا یہ ہندو جبل  
 چھلان ہندوین مسلمانوں داک مل  
 فاضل صاحب کمرش کی بانسری پر مہرت ہیں۔ کیونکہ اس کا  
 سر پریم آتما ہے۔ جلوہ روشنی حیات ہے اور ساز دلبری ہے



مرلی در کمرشن اس میں پھونک مار کر گیان و عرفان کے  
ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے جس سے اطراف عالم میں  
کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار ایشور  
اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و  
جہلوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاب کمرشن کے رنگ و روپ پر مہرہت ہیں  
انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ چھوڑوں میں رنگ و بو کمرشن کی  
بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین  
گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاب کی یہ کتاب "کمرشن لیل" بھارتیہ کمرشن کاویہ  
میں ایک گرافر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد  
رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

لحم الہم

(DR. NIZAM-UD-DIN)

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar

(Kashmir)

ترجمہ: پرتھوی ناتھ کول سیال کشمیری

*Dr. Jagat Mohani*

M. B., B. S.

King Edward Medical College, Lahore (Punjab Old)

MEDICAL SUPERINTENDENT

RATTAN RANI HOSPITAL 10 A. M.-4 P. M.

GYNAECOLOGIST & OBSTETRICIAN

## بھگوان کرشن نے

گیتاجی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلا، مَن، ذہانت اور خودی۔  
ان آٹھ متضاد اقسام سے میری پُرکرتی بنی ہے۔ یہ میری  
اوتیہ اوستھا ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش  
کرو۔ اس کے علاوہ میری اُتم اوستھا سویم ہی میں ہے۔  
جس پر ساری کائنات کا دار و مدار ہے۔ تم اس بات کو  
سمجھ لو، کہ تمام جاندار اور بے جان انہیں دُوسے بنے ہیں۔  
میں اس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔



دکھنا پینہینے کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پاکھش کے  
کالے پندرہ والے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں  
موت کے کالے سائے سنڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں  
مُتبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے، کرشن نے جنم لیا۔

گیتا جی کی بھاشا کی روشنی میں کرشن کے معنی "کالے" کے ہیں۔  
جس کی مناسبت کرشن پاکھش کے تاریک پندرہ وارے کے ساتھ  
ہے۔ یہ وہ ستمے تھا جب جلّت کے تمام رہنے والے لوگوں میں

نا سمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا۔۔۔ اندھکار کے اس  
دور میں کرشن جیسے روشن ضمیر رہنے والے وجود کی تشذّصورت تھی  
جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کر توت والے

منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتا جی  
کے درس سے برہمانڈ کی اصلیت اور مایا کی مہیت سے واقف کیا  
جھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود

جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مری منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہر



کرشن کے مڑی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیار



بھگوان کرشن جی مڑی بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے  
لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُسنے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔  
کرشن جی سیکولر ازم کے اولین پرچارک تھے۔ انہوں نے لوگوں کو  
بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زیرِ پلے سانپوں اور



رہنماؤں کو بھی قابو کر لیا اور اُن کا سہارا کیا ۔



کرشن جی دھرم کے محافظ سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔  
 انہوں نے انسان کو دنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور  
 حق پرست تھے۔ وہ پانڈوؤں کے دوست اور پُشت پناہ تھے۔ انہوں  
 ظلم و تشدد، جلعساری اور دغا بازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے  
 اکھڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ  
 ”دھرم یگ“ کے تنظیمی ادارہ نے انہیں ”کشمیر کا رسکھان“ کا  
 خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی  
 کا بھرپور اظہار اپنے شہدوں میں ہمارے سامنے پیش  
 کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی  
 کے سندر مرقعے سجائے ہیں۔ ان کی کتاب ”کرشن لیلا“  
 کی لیلیاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ ان کے اس  
 عظیم کام سے سوشل ازم اور قومی یکت کے میدان  
 میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دعا ہے کہ یثودھا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ  
 میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا نگلے میں زرق برق جواہر  
 کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو  
 ابدی مسرت عطا کرے!

83-8-30  
 (ڈاکٹر جگت موہنی)



کشمیری غلام وادب اور قومی یکتا کے کار کو بڑھاوا دینے کے  
 سلسلہ میں فاضل کشمیری نے شری جی صاحب اور  
 سلوک مہلہ نواس اور ستھ رنگ کے بعد اس بار اپنی  
 کرشن لیلایوں کا یہ حسین گلدستہ بالک اوستھا عوام کے  
 بہبود کے لئے منظر عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے،  
 جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ اس  
 دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت  
 میں دور رس نتائج برآمد ہوں گے۔

علی محمد لکھنؤ  
 علی محمد لکھنؤ

سرنگر کشمیر  
 ۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalagar, P. O. Natipur  
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلیاؤں سے سب کو یکساں طور پر  
اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بابا کُروپ سُور داس اور رس خان  
جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ ان دو  
شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق و تسلیہ رس یعنی  
شفقتِ مادرِی کا جذبہ سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب  
کو امربنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کشمیری ایک ایسی  
شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو  
آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے  
ہیں فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ

اپنی سُربلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں۔ وہ  
 پریم ہنس رام کرشن مہاراج کے سرودھرم سمونے (Harmony of religions)  
 کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصور کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی  
 مقدس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنہکھ صاحب میں ایک ہی  
 پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمیک محفلوں اپنی کرشن لیلایس  
 سناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے  
 ایک پُر کیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست،  
 روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجہ  
 ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی  
 سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اِس بار فاضل صاحب نے بالک اوسنتھا کی کتابت و تزیین  
 اپنے مَن چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصہ ہے۔

یحیٰی لال سہرو

25.1.86

25-1-1984



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalleled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has risen in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवान्वाच ॥ अमयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवसिति

॥१॥३॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिर्यशः  
दमश्च यद्वैश्वदेवायस्तप आर्जवम् ॥१॥३॥

श्री भूतसर्गा लोकेऽसिन्दव आसुर एव च ।  
 देवो विस्तराः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

मा भुवः संपदं देवीमभिजातोऽसि पादव ॥

book 'Krishen Leela'  
 will illumine the  
 whole world.

I hope that each &  
 every human being  
 should and must own  
 this valuable book, so  
 that they also rise to  
 that state of divine  
 oneness where limita-  
 tion of caste and creed  
 are not recognised.

6-11-83. Lakshman joo  
 Gupnagaunga

(شیو آچاریہ سوامی لکشمین جومہاراج - گیت گنگا سرینگر)  
 शेवाचार्या स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ देवी संपद्विमोक्षाय निबन्धयासुरी मता ।



فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ

اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے  
بانیوں اور پیروکاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں جس کے  
امینہ میں ان کی انوارِ محمدی شری جو حب صابہ اور کرشن لیلہ  
جیسی گر انداز تصانیف پیش کی جاسکتی ہیں۔

زیرِ نظر ان کی تصنیف "کرشن لیلہ" ان کی کرشن بھگتی  
کی تصویر ہے۔ فاضل مصنف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج  
پر سندر نظائیں لکھی ہیں۔ انہیں سنکر اور پڑھ کر سامعین  
اور قارئین روحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں،  
خالصہ درباروں اور دہا التسوؤں میں حاضرین انہیں اپنا کام  
سنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور ان کی قدر دانی کرتے ہیں۔  
فاضل صابہ کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے  
دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

میلاد ام نجیون۔۔۔ گوجرانوالہ

۲۶ فروری ۱۹۸۴ء





*Symbol of Better Tomorrow*

Save a little for your

**FUTURE**

*in Various Deposit Schemes*

**of**

**Jammu & Kashmir Bank**

**Tailormade to Suit everybody's  
requirements**

**For details please step into  
any nearest Branch/Office  
of**

**Jammu & Kashmir Bank.**

कृष्ण-लीला

# Krishna Leela

*This Beautiful Book  
of the Personality of  
Krishna*

provides the key to how humanity can become united in  
peace, prosperity and friendship around a common cause.

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA  
LIBRARY. SRINAGAR.  
Accession No. 3639  
Date

Printed at Hind Samachar Printing Press,  
Pacca Bagh, Jalandhar City.

















**KRISHNA LEELA**